



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“

उझिया भोगवती ने घर सूपियां,
ते करें स्वजानों खुराब।
ज्यू अविनीत नें गण सूपियां,
तो जाए टोलां री आब।

उझिया और भोगवती को घर सौंपने पर
वे स्वजाने को बर्बाद कर देती हैं। उसी
प्रकार अविनीत को गण सौंपने पर वह
गण की आभा को धूमिल कर देता है।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

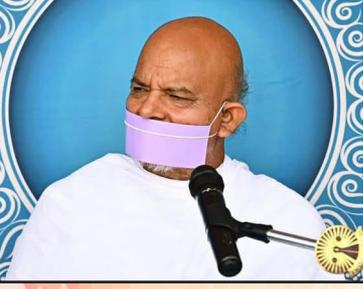
वर्ष 26 • अंक 14 • 06 जनवरी- 12 जनवरी, 2025



प्रत्येक सोमवार

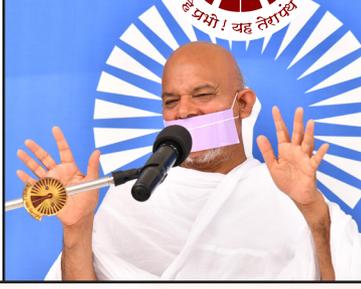
प्रकाशन तिथि : 04-01-2025 • पेज 12

₹ 10 रुपये



आत्म युद्ध से पाएं
मोहनीय कर्म
पर विजय : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 11



भगवान पार्श्वनाथ
ने किया अनगिनत
आत्माओं का कल्याण :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address
Here

सम्यक्त्व युक्त चारित्र है सर्वश्रेष्ठ : आचार्यश्री महाश्रमण

बलडाना।

29 दिसम्बर, 2024

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमणजी लीमडी से लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर बलडाना में स्थित सरकारी माध्यमिक शाला में पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि व्यक्ति के भीतर अनेक वृत्तियां होती हैं, और इन्हीं वृत्तियों से प्रवृत्तियां भी उत्पन्न होती हैं। जब मन, वचन और काय में दुष्प्रवृत्तियां प्रकट होती हैं, तो उनकी जड़ में राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ जैसी वृत्तियां होती हैं।

वृत्ति, प्रवृत्ति और उसके आगे निवृत्ति का महत्व है। अशुभ प्रवृत्तियों से निवृत्ति का प्रयास करना चाहिए। जब मन, वचन और काय के योग मोहनीय कर्म से संयुक्त होते हैं, तो ये योग अशुभ बन जाते हैं। वहीं, जब मोहनीय कर्म से वियुक्त रहते हैं, तो ये योग शुभ बन सकते हैं। मोहनीय कर्म का उदय निरंतर चलता रहता है।



आदमी स्वाध्याय करे, ध्यान में बैठ जाए, फिर भी मोहनीय कर्म का उदय चालू ही रहता है।

मोहनीय कर्म का उदय दो प्रकार का होता है—सुप्त अवस्था और जागृत अवस्था। जब यह जागृत होता है, तो योग अशुभ बन जाते हैं। कषाय जब योग के साथ मिलते हैं तो मलिनता की बात आती है। सहज रूप से मोहनीय

कर्म का उदय दिन-रात चालू रहता है, लेकिन यदि यह शांत स्थिति में है, तो योग अशुभ नहीं बनते। पूज्यवर ने इसे एक उदाहरण से समझाया कि जैसे भोजन अन्न नली में जाए, तो कोई समस्या नहीं होती, परंतु यदि वह श्वास नली में चला जाए, तो परेशानी हो सकती है। इसी प्रकार कषाय यदि आश्रव के मार्ग पर जाए, तो योग अशुभ

नहीं बनते, लेकिन यदि कषाय योग वाले मार्ग में आ जाए, तो योग मलिन हो सकते हैं। साधुत्व और संन्यास संसार की बहुत बड़ी उपलब्धि है। वर्तमान में सम्यक्त्व युक्त चारित्र से अधिक श्रेष्ठ कुछ नहीं। विद्यालयों में भौतिक शिक्षा के साथ-साथ त्याग, संयम, नैतिकता और अहिंसा की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। ज्ञान और आचार दोनों जीवन

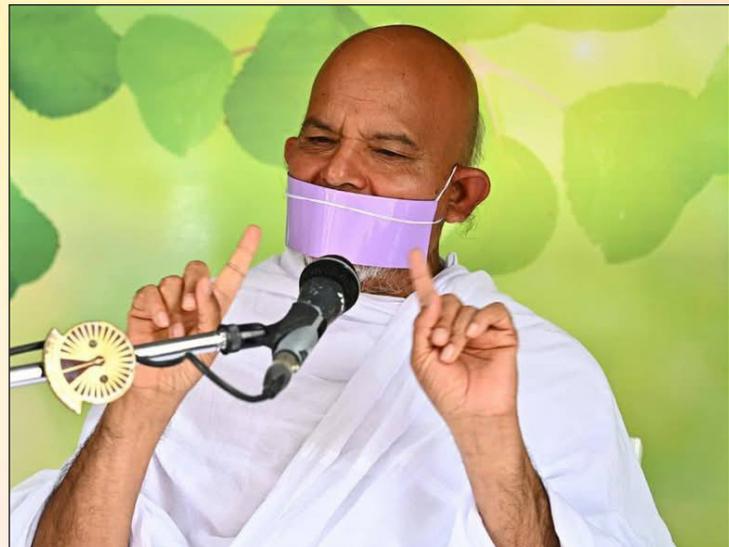
का आधार हैं। इसलिए ज्ञान और आचार का समन्वय होना चाहिए। इसी प्रकार साधुत्व में श्रुत और शील दोनों का होना बहुत आवश्यक है। जीवन में कषाय पतला रहे तो सम्यक्त्व भी निर्मल रह सकता है।

चतुर्दशी के उपलक्ष में पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कर आचार व चर्या संबंधी प्रेरणा प्रदान करवाई। उन्होंने कहा कि हम पूज्य डालगणी की प्रवासित भूमि में विचरण कर रहे हैं। कच्छी पूज के रूप में उनकी ख्याति थी। उनका अनुशासन तेजस्वी था। गुरुदेव तुलसी का अनुशासन भी तेजस्वी था। हमें निर्मल साधुपणा बनाए रखना चाहिए।

विद्यालय प्राचार्य बिपिन भाई ने स्वागत करते हुए अपनी भावना प्रकट की। अणुव्रत विश्व भारती एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पदाधिकारियों द्वारा पृथक्-पृथक् रूप में सन् 2025 का कैलेंडर पूज्यवर को समर्पित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

स्वतंत्र अवस्था में किया गया त्याग है सच्चा त्याग : आचार्यश्री महाश्रमण



लीमडी।

28 दिसम्बर, 2024

जिन शासन सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी टोकरला से लगभग 15 किलोमीटर का विहार कर लीमडी के नीलकंठ विद्यालय के प्रांगण में पधारे। परम पूज्य श्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में आध्यात्मिकता भी जीवित है और भौतिकता भी। ये दो मार्ग बनते हैं—एक भौतिकता का और दूसरा आध्यात्मिकता का। दोनों मार्गों में अंतर है। जहां व्यक्ति भौतिक सुखों के प्रति अनुरक्त

और आसक्त होता है, और उसके तहत भौतिकता की ओर दौड़ता है, इसका अर्थ यह है कि वह अध्यात्म से दूर हो रहा है।

जहां व्यक्ति थोड़े अंश में भौतिकता का त्याग करता है, वह त्याग आत्मोत्थान की भावना से प्रेरित होकर किया गया त्याग होता है। यह त्याग, व्रत के रूप में, व्यक्ति को अध्यात्म की ओर आगे बढ़ाने वाला होता है। भौतिक वस्तुएं पौद्गलिक होती हैं, परंतु कभी-कभी वे आध्यात्मिक साधना में सहायक भी बन सकती हैं। व्यक्ति का स्वेच्छा से किया गया त्याग अपने आप में धर्म है। मजबूरी में किया गया त्याग त्याग नहीं कहलाता।

जो व्यक्ति पौद्गलिक वस्तुओं को परवशता के कारण नहीं भोग सकता, उसका त्याग सच्चा त्याग नहीं है। त्यागी वह होता है, जो स्वतंत्र अवस्था में अपनी प्रिय और कांत वस्तुओं से मोह त्याग देता है, जैसे 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ ने किया था। उनका त्याग पदार्थों के प्रति विरक्ति और अहिंसा के प्रति अनुरक्ति और अनुकंपा से प्रेरित था।

साधु त्यागी होता है। साधु बनने का मूल आधार गरीबी या मजबूरी नहीं, बल्कि वैराग्य है। जहां त्याग होता है, वहां सुख होता है।

(शेष पेज 10 पर)

भोग पर रहे योग का अंकुश: आचार्यश्री महाश्रमण

पंछिना गांव, सुरेंद्र नगर।

27 दिसम्बर, 2024

युगप्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी मीठापुर से विहार कर एक्युरेट इंफ्रा इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री, पंछिना गांव में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि मनुष्य का जीवन अनेक तत्वों का समवाय है। इसमें चेतन और अचेतन दोनों जुड़े हुए हैं। शरीर अपने आप में पुद्गल है, लेकिन उसमें चैतन्य भी विद्यमान है। चैतन्ययुक्त शरीर होने के कारण भोजन, पानी, हवा, मकान और चिकित्सा जैसी कई आवश्यकताएं होती हैं, जिनकी पूर्ति अपेक्षित है।

हवा, पानी और भोजन तीन ऐसी चीजें हैं जो जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं। जल, अन्न और सुभाषित को तीन रत्नों के रूप में बताया गया है। आवश्यकता के समय दो गिलास पानी का भी बड़ा महत्व होता है।

पृथ्वी पर सहजता के साथ उपलब्ध इन रत्नों का दुरुपयोग करने से बचने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने दो कथानकों के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को कभी भी अनावश्यक रूप से जल का अपव्यय नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार अन्न के अपव्यय से बचने का प्रयास करना चाहिए। शादी, विवाह आदि-आदि विशेष अवसरों पर अति उत्साह के साथ बनाने वाले



और खाने वाले दोनों को अन्न की उपयोगिता को समझने का प्रयास करना चाहिए और अन्न, जल की अनावश्यक बर्बादी से बचने का प्रयास करना चाहिए। बनाने वाले यदि सौ से अधिक आइटम बना भी दें तो खाने वाले को इसका ध्यान रखना चाहिए। मनुष्य को घमंड नहीं करना चाहिए। किसी बात का गौरव हो सकता है, लेकिन पदार्थों का भोग सीमित होना चाहिए। अत्यधिक भोग से रोग उत्पन्न हो सकता है। इसलिए मनुष्य को योग और धर्म की साधना भी करनी चाहिए। भोग पर योग का अंकुश आवश्यक है।

गृहस्थ जीवन में अर्थ और काम पर धर्म

का अंकुश रहेगा तो जीवन की गाड़ी सही दिशा में चल सकती है। असंयम से नुकसान हो सकता है। धर्म का अंकुश इस जीवन और आगामी जीवन, दोनों के लिए कल्याणकारी है। धन-सम्पत्ति साथ नहीं जाती, लेकिन धर्म का प्रभाव साथ जाता है। धर्म की साधना जीवन में कल्याणकारी बन सकती है।

राजूभाई ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। पूज्य प्रवर ने आज तीन चरणों में 20 किमी का विहार किया। सांयकालीन विहार कर पूज्य प्रवर टोकरला पधारे।

भगवान पार्श्वनाथ जयंती पर उपसर्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान

अणुविभा, जयपुर। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनगौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में जैन शासन के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्म जयंती पर उपसर्गहर स्तोत्र के 108 पाठ का अनुष्ठान अणुविभा केन्द्र जयपुर में संपन्न हुआ। जिसमें 27 जोड़ों सहित 108 आराधकों ने भाग लिया। साध्वी मधुलता जी, साध्वी समितिप्रभा जी, साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने समस्त जनमेदिनी को बीजमंत्र की एक माला के साथ शक्तिवर्धक, ऊर्जादायक, रोग-शोक-विघ्नबाधा निवारक, महान प्रभावक उपसर्गहर स्तोत्र का एकलय, एकस्वर अनुष्ठान संपन्न करवाया। अनुष्ठान में संभागी साधकों, आराधकों ने अपूर्व ऊर्जा, शांति और आनंद का अनुभव किया।

साध्वी मधुलता जी ने भगवान पार्श्वनाथ को पुरूषादानीय बताते हुए कहा - जैनशासन के 24 तीर्थंकरों में भगवान पार्श्वनाथ के प्रति श्रद्धालुओं में अतिरिक्त श्रद्धा के भाव देखे जाते हैं। वर्तमान में सर्वाधिक मंदिर, स्तोत्र, स्तुतियां भगवान पार्श्वनाथ की उपलब्ध होती हैं। तेरापंथ युवक परिषद जयपुर एवं तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर के संयुक्त तत्वाधान में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। तेरापंथी सभा जयपुर के मंत्री सुरेंद्र सेखानी, तेरापंथ युवक परिषद जयपुर के अध्यक्ष गौतम बरड़िया, उपाध्यक्ष प्रवीण जैन, तेरापंथ महिला मण्डल जयपुर शहर की अध्यक्ष नीरू मेहता की उपस्थिति के साथ-साथ अनेक सभा संस्थाओं के पदाधिकारी और कार्यकर्तागण उपस्थित रहे। कार्यक्रम की सफलता में सौरभ जैन, राकेश जैन, चंचल दुगड, एकता बरड़िया का सहयोग उल्लेखनीय रहा। तेरापंथी सभा जयपुर के उपाध्यक्ष सुरेश बरड़िया ने साध्वीश्री एवं सभागत श्रावक-श्राविकाओं के प्रति आभार ज्ञापन किया।

दुर्जन नहीं, सज्जन बनने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

मीठापुर।

26 दिसम्बर, 2024

जिन शासन के सज्जग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ बगोदरा से विहार कर मीठापुर पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि दुनिया में मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं—महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा।

महात्मा वे होते हैं जो घर-बार छोड़कर संत बन गए हैं। वे शुद्ध साधु होते हैं और पूजनीय-वंदनीय हैं। सदात्मा वे होते हैं जो गृहस्थ जीवन में सादगी और सदाचार के साधक होते हैं। वे सच्चे और सद्गुणी व्यक्ति होते हैं। दुरात्मा वे होते हैं जो बुरे कर्म जैसे हिंसा, चोरी, झूठ-कपट और नशा आदि करते हैं। इसी महात्मा बन जाएं, यह कठिन हो सकता है, लेकिन दुर्जन न बनें, सज्जन बनें। एक व्यक्ति किसी का गला काट दे तो वह केवल शारीरिक हानि पहुंचाने वाला शत्रु है, लेकिन दुरात्मा वह है जो अपनी



आत्मा का नुकसान करता है। दुरात्मा के कृत्य उसे भव-भव में पीड़ा देते हैं। हमारी आत्मा यदि दुरात्मा बन जाए, तो वह सबसे अधिक हानि पहुंचा सकती है। हमारा भला या बुरा करने वाला कोई और नहीं, बल्कि हम स्वयं हैं। इसलिए

हमें खुद को अच्छा बनाकर रखना चाहिए। प्राथमिक शाला के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी आने चाहिए। ज्ञान के साथ ध्यान भी हो, लेकिन अभिमान न हो। विनम्रता का

भाव होना आवश्यक है। विद्या तभी शोभा देती है, जब उसके साथ विनय हो। भाषा में विवेक हो, और गुस्सा नियंत्रित हो।

विनयशील व्यक्ति को चार लाभ मिलते हैं:

1. आयु बढ़ती है।

2. विद्या, यश और कीर्ति प्राप्त होती है।
3. बल में वृद्धि होती है।

विद्यार्थी जीवन ज्ञान और चरित्र विकास का महत्वपूर्ण समय है। अध्यापकों को यह अवसर मिलता है कि वे अनेकों के जीवन को सुंदर और उन्नत बना सकें। गुरु वह होता है जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करता है। धर्मगुरु अपने शिष्यों का नैतिक और आध्यात्मिक विकास करते हैं। ज्ञान प्रदान करना गुरु का कर्तव्य है, और जीवन जीने की कला सिखाना उसका उद्देश्य। विद्यार्थियों को नशामुक्त रहना चाहिए।

ज्ञानशाला में अच्छे संस्कार दिए जाते हैं, जो उन्हें चोरी और झूठ से बचने की शिक्षा देते हैं। ईमानदारी के साथ जीवन में सद्गुणों का विकास होता है। ध्यान का भी अभ्यास होना चाहिए।

पूज्यवर ने विद्यार्थियों से प्रवचन से संदर्भित प्रश्न किए। विद्यालय की ओर से तुषार राठौड़ ने पूज्यवर के स्वागत में भावनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मेधावी छात्र और शिक्षा सहयोगी सम्मान समारोह का आयोजन

जोधपुर।

तेरापंथ भवन में 'आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोगी सम्मान समारोह' का आयोजन साध्वी प्रमोदश्रीजी के सान्निध्य में किया गया। मुख्य वन संरक्षक, आर. के. जैन बतौर मुख्य अतिथि और टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिलीप कावडिया कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा और संस्कारों को प्रोत्साहित करना था।

साध्वी प्रमोदश्रीजी ने अपने वक्तव्य में टीपीएफ को रत्नों की माला की उपमा देते हुए इसकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि टीपीएफ जैसे संगठनों की बौद्धिक और सेवा भावना को समाज के विकास के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। साध्वी जी ने समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि हमें जो समाज से मिलता है, उसे वापस समाज को देना चाहिए। उन्होंने छात्रों से शिक्षा के साथ

धार्मिक और नैतिक संस्कारों को भी आत्मसात करने का आग्रह किया।

कार्यक्रम की शुरुआत और स्वागत कार्यक्रम की शुरुआत में टीपीएफ के अध्यक्ष महेंद्र मेहता ने सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। अनंत मेहता ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। दिलीप कावडिया ने टीपीएफ द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि यह संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज सेवा के क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि टीपीएफ का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को सशक्त बनाना है।

मुख्य अतिथि आर. के. जैन ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल अंकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों का विकास होना चाहिए। उन्होंने छात्रों को सफलता के सूत्र बताते हुए कहा कि अनुशासन, समर्पण और सतत प्रयास ही जीवन में सफलता के

मुख्य आधार हैं। उन्होंने यह भी कहा कि टीपीएफ द्वारा आयोजित यह सम्मान समारोह छात्रों और समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो उन्हें आगे बढ़ने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने का मार्ग दिखाता है।

सत्र 2023-24 में 10वीं व 12वीं कक्षा में 85% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 20 मेधावी छात्रों और विभिन्न प्रोफेशनल क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा, 40 शिक्षा सहयोगी परिवारों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने समाज के 54 बच्चों की शिक्षा के लिए योगदान दिया।

कार्यक्रम में प्रमुख समाजसेवी और गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे, जिनमें तेरापंथ सभा और युवक परिषद के पदाधिकारी शामिल थे। निखिल मेहता ने कुशल संचालन किया और डॉ. उम्मेद राज तातेड़ ने आभार व्यक्त किया।

अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का सफल आयोजन

बैंगलोर।

बैंगलूर। आचार्य तुलसी चेतना केंद्र, कुंबलगुडु, बैंगलूर के प्रांगण में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

इस शिविर में 74 साधकों ने भाग लिया और ध्यान के विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से नए-नए अनुभव प्राप्त किए।

ध्यान, आसन, अनुप्रेक्षा और मंगल भावनाओं के प्रयोगों ने साधकों को प्रेरित और रोमांचित किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के गूढ़ प्रवचन साधकों को नई ऊर्जा प्रदान करने वाले थे। इस शिविर में कई युवक-युवतियां, प्रोफेशनल, व्यवसायी और इटली से आए डॉक्टर ने भी भाग लिया।

कई प्रतिभागी पहली बार शिविर में शामिल हुए थे, और उनके लिए मुख्य आकर्षण साध्वियों द्वारा दिए गए निरंतर सान्निध्य और व्यक्तिगत जिज्ञासाओं का समाधान रहा।

शिविर की दिनचर्या भक्तामर थैरेपी से आरंभ होती थी, इसके साथ चौबीसी का प्रयोग प्रतिभागियों को भाव-विभोर कर देता था।

शुरुआती दिनों में कुछ साधकों को बेचैनी और शरीर में गर्मी का अनुभव हुआ, और कुछ ने शिविर छोड़ने का विचार भी बनाया।

लेकिन साध्वियों ने उन्हें विशेष ध्यान प्रयोगों और मनोबल बढ़ाने वाले प्रयासों से स्थिर किया। जो पहले दिन उदास थे, वे समापन दिवस पर शिविर छोड़ने के विचार से दुखी थे।

शिविर में सुबह 5:15 बजे से रात 9:30 बजे तक विभिन्न सत्र आयोजित किए गए, जिनका संचालन साध्वी उदितयशाजी, साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी भव्यप्रभाजी, और साध्वी शिक्षा प्रभाजी द्वारा किया गया। साध्वी श्री ने इस सफल आयोजन का श्रेय गुरु दृष्टि, गुरु शक्ति, और गुरु से प्राप्त ऊर्जा को दिया।

ध्यान और आसनों के प्रयोग वीणा जैन और सविता जैन ने करवाए। संपूर्ण व्यवस्था प्रेक्षा फाउंडेशन की टीम द्वारा कुशलता से संचालित की गई, जो साधकों की साधना में सहायक रही।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन ने साध्वियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने शिविर का संचालन इतनी कुशलता से किया मानो वे प्रशिक्षकों को भी पीछे छोड़ रही हों।

वीणा जैन ने कहा कि प्रेक्षा फाउंडेशन के इतिहास में यह पहली बार है जब पूरा शिविर चारित्र आत्माओं की देखरेख में संपन्न हुआ। शिविर में प्रेक्षा फाउंडेशन के छत्रसिंह मालू का भी सराहनीय श्रम नियोजित हुआ।

श्रीउत्सव प्रदर्शनी का भव्य शुभारंभ

कोयंबतूर।

एकेएस नगर के तेरापंथ भवन में 'श्री उत्सव - एक कदम स्वावलंबन की ओर' का शुभारंभ टाइल स्पॉन्सर एच एम टेक्सटाइल्स के मनोहरलाल, किशोर, रोहिणी सेठिया द्वारा किया गया। दूसरी मंजिल के एग्जिबिशन हाल की प्रदर्शनी का शुभारंभ को स्पॉन्सर पालघाट के मोतीलाल गीता गोयल परिवार ने किया।

दूसरे चरण के कार्यक्रम में प्रायोजकों का सम्मान कार्यक्रम हुआ। सबका स्वागत तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू सेठिया ने किया। कार्यक्रम में मोनिका लुनिया ने महिला मंडल द्वारा किए जा रहे विभिन्न सामाजिक कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रदर्शनी के सफल आयोजन में संपूर्ण महिला मंडल और कन्या मंडल का अहम योगदान रहा। मीडिया प्रभारी किशोर जैन ने बताया कि इस प्रदर्शनी से प्राप्त राशि

का उपयोग महिला मंडल के विभिन्न सामाजिक कार्य और कैंसर पीड़ितों को सहायता के लिए किया जायेगा।

दो दिवसीय प्रदर्शनी में फैशन वेयर, ज्वेलरी, फैसी आइटम, हैंडीक्राफ्ट्स, फूड आइटम्स और अन्य वस्तुओं की स्टॉल में लोगों ने किफायती दामों में खरीदारी की। कार्यक्रम का संचालन मोनिका लुनिया और धन्यवाद ज्ञापन सुमान सुराना ने किया।

ध्यान दिवस का आयोजन

गोरेगांव, मुंबई।

तेरापंथ भवन के प्रांगण में विश्व ध्यान दिवस का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस अवसर पर प्रेक्षाध्यान ट्रेनर रेखा बांठिया, सरोज चंडालिया एवं सायर बैद की विशेष उपस्थिति रही।

उन्होंने कहा कि विश्व ध्यान दिवस मनाने का उद्देश्य, दरअसल सभी को उच्च स्तर के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य से लाभान्वित बनाने में मदद करना है। जब हम ध्यान लगाते हैं, तो हम अपने मस्तिष्क

में शान्त विचारों को केन्द्रित करते हैं और करुणा व सम्मान को जगाते हैं।

निजी तौर पर इस बदलाव का असर दूर तक नज़र आता है, जिससे हमारे परिवारों, समुदाय और उससे इतर भी समरसता प्रेरित होती है।

तीनों प्रशिक्षकों ने ध्यान के प्रयोग कराते हुए अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, मंत्री सुरेश ओस्तवाल ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष प्रतिमा सांखला ने किया।

प्रेक्षाध्यान से तनाव मुक्ति संभव

महरोली।

योग दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा- योग साधना की विशिष्ट पद्धति है। इसका सम्बन्ध लगभग सभी धर्मों के साथ रहा है। इस विषय में अनेकों आचार्यों ने ग्रन्थों की रचना की है। महर्षि पतंजलि का 'योग दर्शन' योग का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। वर्तमान में योग के दो अंग प्रमुख हैं - आसन और प्राणायाम। ध्यान, धारणा,

समाधि गौण हैं। प्रांजल प्रतिभा के धनी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अपने शरीर को प्रयोगशाला बना कर 13 वर्ष तक प्रयोग किये, फिर प्रेक्षाध्यान पद्धति का आविष्कार किया। 'प्रेक्षा' शब्द 'इक्ष' धातु से से बना है, जिसका अर्थ है- 'देखना'। आत्मा से आत्मा को देखना। आत्मा तक पहुंचने के लिए पहले शरीर के चैतन्य केन्द्रों को देखना।

आधुनिक मनुष्य तनाव की बीमारी से ग्रस्त है चाहे वकील है या डॉक्टर, टीचर है या प्रोफेसर

नेता है या अभिनेता, व्यापारी है या उद्योगपति प्रत्येक व्यक्ति तनाव की बीमारी से पीड़ित है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से तनाव से मुक्त होकर सुख, शान्ति आनन्दमय जिन्दगी जी सकता है। आयोजन का शुभारंभ प्रेक्षागीत से साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिन्तनप्रभाजी ने किया।

उपासक एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक विमल गुणेचा ने मंगल भावना का प्रयोग एवं प्रेक्षाध्यान की संक्षिप्त जानकारी दी और प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया।

शिविर के दौरान मनाया गया विश्व ध्यान दिवस

बैंगलोर।

साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर के दौरान विश्व ध्यान दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तथा प्रेक्षा प्रशिक्षक छत्र सिंह मालू ने मंगलाचरण के रूप में ध्यान दिवस पर गीत प्रस्तुत किया। तदुपरांत प्रेक्षा प्रशिक्षिका सविता जैन ने विश्व ध्यान दिवस के सन्दर्भ में अपने विचार रखे।

साध्वी उदितयशा जी ने ध्यान को शान्ति, सौहार्द और आध्यात्मिक आनंद का आधार बताते हुए कहा कि आज सम्पूर्ण विश्व को इसकी बहुत आवश्यकता है।

हम सौभाग्यशाली हैं कि प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के अवदान प्रेक्षाध्यान के माध्यम से इस प्रकल्प से पहले से ही जुड़े हुए हैं। तदुपरान्त साध्वीश्री जी ने चैतन्य केंद्र पर रंगों के

आधार पर नमस्कार महामंत्र के पदों का ध्यान कराया। साध्वी संगीतप्रभाजी ने वर्तमान युग के सन्दर्भ में विश्व ध्यान दिवस की आवश्यकता पर अपने विचार रखते हुए कहा कि अशान्ति, तनाव और असहिष्णुता की लपटों से झुलस रही मानव जाति की दुर्दशा को देखते हुए ही ध्यान की महत्ता की गूंज ने संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा खटखटाया है।

साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षा प्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। प्रेक्षा प्रशिक्षक साउथ को-आर्डिनेटर एवं इस शिविर की संयोजिका वीणा बैद ने प्रेक्षा फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी तथा कहा कि यह गौरव का विषय है कि प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के दौरान ही विश्व ध्यान दिवस की घोषणा हुई है, यह ऐसा शुभ संयोग है जो ध्यान की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में योग्य बनने का सफल संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षिका उर्मिला सुराणा ने किया।

संक्षिप्त खबर

तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन की परीक्षा का आयोजन

आर आर नगर। आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत अ.भा.ते.म.मं द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन की परीक्षा का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल आर आर नगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। 6 परिक्षार्थियों ने दोनों दिन परीक्षा दी। तत्त्वज्ञान प्रभारी मंजू बोथरा एवं सह प्रभारी अनिता बैद ने सुंदर व्यवस्था की। पर्यवेक्षक के रूप में अध्यक्ष सुमन पटावरी, मंत्री पदमा महेर, अभातेममं से मधु कटारिया, शारदा बैद एवं पूर्वाध्यक्ष सरोज आर बैद की सक्रिय उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह

रायसिंहनगर। टीपीएफ रायसिंहनगर शाखा (सेंट्रल जोन) का शपथ ग्रहण स्थानीय निर्माणाधीन तेरापंथ भवन प्रांगण में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक मंगलाचरण से हुई। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के स्थानीय अध्यक्ष और TPF सदस्य रविंद्र कुमार जैन के द्वारा पुनः मनोनीत अध्यक्ष डॉ. मुकेश जैन को अध्यक्ष पद की शपथ दिलवायी गयी। तत्पश्चात समस्त कार्यकारिणी ने सामूहिक शपथ ग्रहण की। मनोनीत अध्यक्ष ने पदाधिकारियों को बधाई देते हुए संघ और संघपति के प्रति समर्पित रहने और दायित्वपूरित रहने के लिए प्रेरित किया। TPF के अंतर्गत आचार्य श्री महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना, मेधावी सम्मान, उड़ान, चौका आरोग्यम, गुरुदेव के रास्ते की सेवा, परामर्श, आध्यात्मिक ट्रेनिंग आदि के बारे में बताते हुए आयामों में सहयोगी बनकर संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयासरत रहने के लिए प्रेरित किया गया। सचिव सीए पारस बांठिया ने आभार ज्ञापन कर कार्यक्रम सम्पन्न किया।

श्री उत्सव में झलकी महिलाओं की आत्मनिर्भरता

अहमदाबाद।

डॉ. मुनि मदनकुमार जी के मंत्रोच्चार के साथ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रीउत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मंडल की अध्यक्ष हेमलता परमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि मेयर प्रतिभा जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तेरापंथ महिला मंडल की सराहना। वर्षा डोशी (वाइस प्रेसिडेंट, बीजेपी गुजरात) ने महिलाओं के आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन को प्रोत्साहित करने के लिए मंडल की प्रशंसा की। राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अदिति सेखानी

और क्षेत्रीय प्रभारी नीतू बेद ने भी अपने विचार साझा किए।

श्रीउत्सव के आयोजन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए वक्ताओं ने कहा कि पहली बार 'पैन इंडिया' स्तर पर इतना बड़ा आयोजन हुआ है। उन्होंने अध्यक्ष हेमलता परमार और उनकी टीम को शुभकामनाएं दीं और अहमदाबाद महिला मंडल की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम का संचालन सरिता लोढ़ा और सोनिया सिंघवी ने प्रभावी ढंग से किया। मंडल की मंत्री बबीता भंसाली ने आभार व्यक्त किया। संयोजन में सहमंत्री सरिता लोढ़ा, कोषाध्यक्ष संगीता

बाठिया, संगठन मंत्री रेखा धुप्या, सोनिया सिंघवी, प्रियंका संकलेचा और अरुणा सुतरिया का विशेष योगदान रहा।

श्री उत्सव में कुल 115 स्टॉल लगाए गए, जिनमें से 32 स्टॉल दूसरे शहरों और गांवों से आए प्रतिभागियों द्वारा लगाए गए थे।

भूरी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट ने कार्यक्रम स्थल के उपयोग के लिए सहमति प्रदान की, और तेरापंथ समाज ने भी आयोजन के लिए पूर्ण सहयोग दिया। दो दिनों तक चले इस 'श्री उत्सव' में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और इसे सफल बनाया।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का भव्य आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा आचार्य श्री तुलसी की मासिक तीज पर आशीर्वाद भवन में आयोजित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने प्रेक्षा ध्यान के अर्थ, इतिहास एवं जीवन शैली के बारे में बताते हुए कहा कि जैन धर्म में ध्यान का अत्यधिक महत्व रहा है। तेरापंथ धर्म संघ में आचार्य

तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान के द्वारा इस ध्यान पद्धति को पुनर्जीवित किया है। प्रेक्षा ध्यान का अर्थ है गहराई से देखना, आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना और अपने भाव तंत्र को सक्रिय करना।

ध्यान साधना द्वारा हम सिर्फ शरीर और मन को ही नहीं बल्कि अपनी आत्मा को भी जान सकते हैं।

अध्यक्ष संजू लालानी ने बताया कि आचार्य श्री महाश्रमणजी ने इस वर्ष को प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष घोषित किया है। कार्यशाला में

साध्वी कृतार्थप्रभाजी ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक लाभ बताते हुए प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग करवाए एवं सुमधुर गीतिका का संगान किया। उपासिका प्रतिभा चोपड़ा ने प्रेक्षा ध्यान को सभी को अपनाने की प्रेरणा दी।

शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हंसराज डागा ने प्रेक्षा ध्यान की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किये। मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने समागत सभी का आभार व्यक्त किया एवं आगामी प्रेक्षा ध्यान शिविर की जानकारी दी।

कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हैदराबाद द्वारा विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने के लिए कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन डी. वी. कॉलोनी स्थित सेंट मार्क्स स्कूल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपाध्यक्ष अणुव्रत सुराणा द्वारा मंगलाचरण से की गई।

कोषाध्यक्ष अहम बेगानी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। उन्होंने टीपीएफ के SHINE आयाम के बारे में भी जानकारी दी।

टीपीएफ राष्ट्रीय टीम से प्रोजेक्ट चेररमैन ऋषभ दुगड ने टीपीएफ हैदराबाद को कार्यक्रम के आयोजन पर बधाई दी एवं इसी स्कूल से अपनी

शिक्षा प्राप्त करने के दिनों को याद किया। उन्होंने विद्यार्थियों को संदेश देते हुए कहा कि आज के युग में शिक्षा के महत्व को समझ कर आप लोग उच्च शिक्षा ग्रहण करें व अपने लक्ष्य को पाने के लिए खूब मेहनत करें।

कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम में टीपीएफ इंटेलेक्चुअल सर्विसेज चेररमैन एडवोकेट दीपक संचेती ने लीगल प्रोफेशन के बारे में, जयंती सुराणा ने मैनेजमेंट प्रोफेशन के बारे में, पीयूष सेठिया ने इंजीनियरिंग प्रोफेशन, डॉ. तुषार चोपड़ा ने मेडिकल प्रोफेशन और विक्की जैन ने पायलट कोर्स के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को दी।

सी.ए. मोहित जैन ने चार्टर्ड एकाउंटेंट प्रोफेशन के बारे में प्रतिदिन की गतिविधियों को मनी मैनेजमेंट

से जोड़कर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। सेंट मार्क्स स्कूल के मैनेजमेंट से कॉरस्पॉन्डेंट दक्षा होल्ड एवं हेडमिस्ट्रेस कल्याणी रेड्डी का टीपीएफ द्वारा सम्मान कर इस आयोजन के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया।

लगभग 100 विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। टीपीएफ अध्यक्ष विरेंद्र घोषल एवं टीम ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाया। कार्यक्रम का सफल संचालन संयोजक व उपाध्यक्ष अणुव्रत सुराणा ने किया एवं संयोजक ऋषभ दुगड ने संपादन में उनका संपूर्ण सहयोग दिया। मंत्री निखिल कोटेचा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

त्रिवेणी संगम का नयनाभिराम दृश्य

जयपुर।

अणुविभा में विराजित बहुश्रुत परिषद् की सम्मानित सदस्या 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी, 'शासनश्री' साध्वी विनयश्रीजी एवं दिल्ली का चातुर्मास संपन्न कर सिंवाची मालाणी की ओर यात्रायित साध्वी अणिमाश्रीजी का आध्यात्मिक मंगल मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ।

'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी ने कहा तेरापंथ धर्मसंघ गौरवशाली धर्मसंघ है। तेरापंथ गण मंदिर में श्रद्धा, भक्ति, मर्यादा व अनुशासन के दीप निरन्तर प्रज्वलित रहते हैं। गण मंदिर के दीपों में एक नाम है साध्वी अणिमाश्रीजी का। ये संघ की प्रभावना करने वाली विशिष्ट साध्वियों में एक साध्वी हैं। ये प्रबुद्ध हैं पर प्रबुद्धता के साथ विनम्रता का संगम, सहजता, सरलता व व्यवहार कुशलता मन को संतोष प्रदान करने वाली हैं। दिल्ली में दो संघ प्रभावक चातुर्मास करके आई हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में इनका वक्तव्य संघ की गौरव वृद्धि करने वाला था। अब सिंवाची मालाणी की यात्रा मंगलमय हो, संघ में कीर्तिमान के कोट रचो, यही शुभांशु है।

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपनी खुशी का इजहार करते हुए कहा आज हम वात्सल्य की गंगोत्री में अवगाहन कर धन्य हो गए हैं। आप वात्सल्य

की मंदाकिनी हैं। मुझ जैसी छोटी साध्वी के सामने आकर आपने मातृ हृदय का अहसास कराया है, आप सचमुच शासन की गौरव हैं।

आप आगम दर्शन की व्याख्याता हैं, आपका बहुश्रुत ज्ञान सबकी प्रतिभा को संतुष्ट करने वाला है। आपश्री से आशीर्वाद लेकर पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार हमने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। पूज्य गुरुदेव की ऊर्जा एवं आशीर्वाद तथा आपश्री की मंगल भावना से हमारा दिल्ली का प्रवास शानदार एवं संघ प्रभावक हुआ। अब हम सिंवाची मालाणी की ओर यात्रायित हैं। आप हमें ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें ताकि हमारी यात्रा सफल एवं सुफल हो। सभी साध्वियां आपश्री की सन्निधि में निरन्तर गति प्रगति करती रहें। 'शासनश्री' साध्वी विनयश्रीजी अभी अस्वस्थ हैं किन्तु आपने भी संघ की अच्छी सेवा की है। हम सब अपनी क्षमता के अनुसार संघ प्रभावना करती रहें। जयपुर में विराजित साध्वी वृन्द ने आगन्तुक साध्वियों के स्वागत में और आगन्तुक साध्वियों ने अपनी खुशी की अभिव्यक्ति में गीत का संगान किया। जयपुर सभाध्यक्ष शांतिलाल जैन, उपाध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दूगड़, पीतमपुरा सभा के मंत्री विरेन्द्र जैन, दिल्ली सभा के सेवा प्रभारी पवन चौपड़ा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

संक्षिप्त खबर

कैंसर जागरूकता अभियान रेली एवं मेमोग्राफी टेस्ट

काजुपाड़ा, मुंबई। तेरापंथ महिला मंडल काजुपाड़ा द्वारा कैंसर जागरूकता अभियान रैली एवं मेमोग्राफी टेस्ट का आयोजन किया गया। जिसमें 25 महिलाओं ने टेस्ट करवाए। मेमोग्राफी टेस्ट मोक कैंसर केयर एंड रिसर्च सेंटर के राजेन्द्र श्रीगडी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पंकज चंडालिया का विशेष सयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी, युवा वाहिनी सह संयोजक महेश परमार, काजुपाड़ा परिषद प्रभारी एवं MBDD मुंबई के संयोजक अमित रांका, स्थानीय नगर सेवक विजु सिंदे, नगर सेवक हरीश भांदिर्गे, आमदार दिलिप मामा लांडे के सुपुत्र प्रणव लांडे एवं तेयुप अध्यक्ष नरेश पगारिया एवं उनकी पूरी टीम उपस्थित रही।

संस्कार निर्माण शिविर में पाई संस्कारों की सुगंध

बैंगलोर।

तेरापंथी महासभा के निर्देशन और तेरापंथ सभा गांधीनगर, बेंगलुरु द्वारा आयोजित कर्नाटक स्तरीय संस्कार निर्माण शिविर का सफल आयोजन आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस शिविर में 54 बालिकाओं ने भाग लिया और अपने जीवन रूपी बगिया को संस्कारों की सुगंध से महकाने के लिए मूल्यवान सूत्र सीखे।

पंच दिवसीय शिविर में ब्रह्म मुहूर्त में भक्तामर थैरेपी से दिनचर्या आरंभ होती थी। ध्यान और योग के माध्यम से Journey of Jainism का हिस्सा बनते हुए बालिकाओं ने Light of Knowledge प्राप्त की और Fight with Karma के लिए स्वयं को तैयार किया।

शिविरार्थियों में संघ और संघपति के प्रति अटूट आस्था का जागरण हुआ। Terapanth is Mera Panth की थीम ने बालिकाओं को गौरव का अनुभव कराया। मंत्र थैरेपी और कायोत्सर्ग के माध्यम से बच्चों ने यह सीखा कि मेरा सबसे अच्छा मित्र मेरी सांस है।

राइट यॉर डेस्टिनी सत्र में दिए गए टिप्स ने बालिकाओं को आत्मविश्वास के साथ यह कहने की प्रेरणा दी कि 'Yes, I can write my own destiny'. Account of Nirjara सत्र में बच्चों ने विभिन्न निर्जरा उपकरणों का उपयोग कर अपने अकाउंट को इनकम से भरने की विधि सीखी। कई बच्चों ने रात्रि भोजन, जमीकंद, सचित आहार, मोबाइल, और स्नान के त्याग का संकल्प लेकर अपने संयम को बढ़ाया। मोटिवेशनल स्पीकर सीमा गादिया ने Monitor Your Screen Time पर प्रस्तुति देकर बच्चों को प्रेरित किया। भावना कोठारी ने Manage Your Emotions पर सत्र लेकर बच्चों को भावनात्मक प्रबंधन के गुर सिखाए।

प्रतिदिन प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना के माध्यम से प्रतिभागियों ने आत्मविशुद्धि का अभ्यास किया। साध्वी उदितयशाजी और सहवर्ती साध्वी वृंद के अथक प्रयासों से यह शिविर अत्यंत फलदायी रहा। प्रतिभागियों ने इस शिविर से न केवल जीवन को बेहतर बनाने के सूत्र सीखे, बल्कि संस्कारों और संयम के साथ आत्मिक विकास की राह पर भी कदम बढ़ाया। पंच दिवसीय शिविर के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के

रूप में उपस्थित महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष कन्हैयालाल गिड़िया, स्थानीय सभाध्यक्ष पारसमल भंसाली, सभा मंत्री विनोद छाजेड़, महासभा से आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा, सदस्य नवनीत मुथा, शिविर के केंद्रीय संयोजक संजय बाठिया, तुलसी चेतना केंद्र के पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन शिविर की स्थानीय संयोजिका नीता गादिया ने तथा आभार ज्ञापन पवन संचेती ने किया। इस अवसर पर सभा के पदाधिकारी, तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, महिला मण्डल अध्यक्षा रिजु डूंगरवाल एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शिविर के व्यवस्थित संचालन में सुमित्रा बरडिया, भारती गादिया, मनीषा घोषल, भानुप्रिया दुगड़, निर्मला आंचलिया, अनीता नाहर, चंद्रा गिल्लुन्डिया, साधना धारीवाल ने अपनी सहभागिता निभाई। समापन समारोह में श्रेष्ठ ज्ञानार्थी ऋषिता नाहर, बैंगलोर एवं यशी जैन, हासन को चुना गया। संस्कार और अनुशासन में श्रेष्ठ पांच-पांच बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर सभा पदाधिकारियों ने साध्वी वृंद एवं चेतना केंद्र की टीम के प्रति आभार ज्ञापित किया।

आवासीय संस्कार निर्माण शिविर

तिरुकलीकुण्डम। मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में तिरुकलीकुण्डम में भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक, दो दिवसीय आवासीय संस्कार निर्माण शिविर, महासभा संगठन यात्रा आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने पार्श्व स्तुति एवं मंत्र अनुष्ठान करवाते हुए भगवान पार्श्व के जीवन पर प्रकाश डाला। दो दिवसीय आवासीय संस्कार निर्माण शिविर में कांजीपुरम, निमली, वालाजाबाद, तिरुकलीकुण्डम, चेंगलपेट, चेन्नई से 40 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

महासभा द्वारा तिरुकलीकुण्डम में संगठन यात्रा के अवसर पर मुनि हिमांशु कुमार जी ने श्रावक समाज को श्रावक संदेशिका पठन तथा संघ की रीति नीति की जानकारी रखते हुए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

जीवन निर्माण का पथ प्रशस्त करता है अणुव्रत

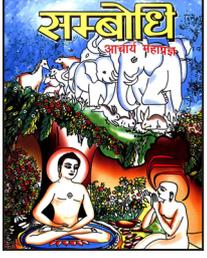
जिम कार्बेट, नैनीताल।

विद्यालय की शिक्षा के माध्यम से बच्चे ज्ञान, कौशल, इतिहास और संस्कृति की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही, अणुव्रत - जीवन विज्ञान उनके जीवन निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है, जो विद्यार्थियों को जीवन को सफल और सार्थक बनाने में सहायता करता है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गांव भलों में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अणुविभा की उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने उपरोक्त विचार प्रस्तुत किए। डॉ. धनपत लुनिया ने अणुव्रत गीत का संगान करते हुए विद्यार्थियों को संयम के महत्व को सरल और प्रभावी ढंग से समझाया। विद्यालय के प्राचार्य प्रकाश चंद्र ने लुनिया दंपति का स्वागत करते हुए विद्यार्थियों को संबोधित करने के लिए आभार व्यक्त किया। विद्यालय की शिक्षिका मंजू जोशी ने भी अतिथियों के प्रति धन्यवाद

ज्ञापित किया। डॉ. कुसुम लुनिया ने विशेष रूप से बालिकाओं को संबोधित करते हुए उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया और विभिन्न लक्ष्य निर्धारण के लिए मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि संयम प्रधान जीवनशैली वर्तमान युग की आवश्यकता है। अणुव्रत त्याग और संयम का आंदोलन है, जिससे व्यापारी, अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी, या कोई भी व्यक्ति अपने संतुलित व्यक्तित्व का विकास करते हुए बेहतर विश्व निर्माण में योगदान दे सकता है।

उन्होंने अणुव्रत विश्व भारती के नेतृत्व में चल रहे जीवन विज्ञान, अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट, डिजिटल डिटॉक्स और एलीवेट जैसे प्रकल्पों की विद्यालयों में बढ़ती लोकप्रियता पर प्रकाश डाला। विद्यालय परिवार को अणुव्रत से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया, साथ ही वहाँ अणुव्रत मंच के गठन का सुझाव दिया गया, जिसे विद्यालय ने सहर्ष स्वीकार किया।

संबोधि



गृहिधर्मचर्या

चैतन्य आत्मा का अनन्य सहचारी धर्म है। वह कभी पृथक् नहीं हो सकता। आत्मा अजर और अमर है। गीता में भी कहा है- 'वह कभी जन्म नहीं लेता और न कभी मरता ही है। उसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता। वह अजन्मा, शाश्वत, नित्य और प्राचीन है। शरीर के मर जाने पर भी वह नहीं मरता।

२४. नासौ नवो नवा जीर्णो, नवोपि च पुरातनः।
आद्या द्रव्यार्थिकी दृष्टिः, पर्यायार्थगता परा ॥

आत्मा न नया है और न पुराना यह द्रव्यार्थिक दृष्टि है। आत्मा नया भी है और पुराना भी यह पर्यायार्थिक दृष्टि है।

२५. नवोऽपि च पुराणोऽपि, देहो भवति देहिनाम्।
शैशवं यौवनं तत्र, वार्धक्यञ्चापि जायते ॥

जीवों का शरीर नया भी होता है और पुराना भी। शरीर में शैशव, यौवन और वार्धक्य बुढ़ापा भी होता है।

आत्मा पहले भी थी, आज भी है और आगे भी रहेगी। नये और पुराने का व्यवहार आत्मा में इसलिए नहीं होता कि वह सर्वकालिक है। न उसका स्वरूप पुराना होना है न नया। दोनों शब्द सापेक्ष हैं। एक रूप को छोड़कर दूसरे रूप में आना नया है और जिसे छोड़ा जाता है वह पुराना है। आत्मा में वैसा नहीं होता। द्रव्यार्थिकदृष्टि से वस्तु का स्वभाव-धर्म अपरिवर्तित होता है।

पर्यायार्थिकदृष्टि भिन्न है। वह पदार्थों की अवस्थाओं को देखती है। अवस्थाएं बदलती हैं अतः नये और पुराने शब्दों का व्यवहार इसमें हो जाता है। आत्मा एक अवस्था का त्याग कर दूसरी अवस्था में आती है तब वह पहले की अपेक्षा नयी है और नये की अपेक्षा पुरानी।

शैशव, यौवन और बुढ़ापा एक ही शरीर की तीन अवस्थाओं से आत्मा में बालक, युवक और वृद्ध शब्दों का व्यवहार हो जाता है।

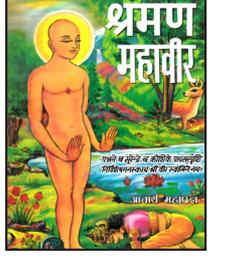
गीता कहती है- 'इस शरीर में आत्मा बचपन, यौवन और वार्धक्य में से गुजरती है। यह शरीर की दशा है। आत्मा उसमें वही है। शरीर का अंत हो जाता है। तब आत्मा नये शरीर को बना लेती है। यह क्रम मुक्ति के अनंतर रुक जाता है। प्राणों के वियोजन से धीरे मनुष्य खिन्न नहीं होते। वे सत्य को जानते हैं।

(क्रमशः)



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर

नारी का
बन्ध-विमोचन

'यह किसने किया?' संभ्रम के साथ श्रेष्ठी ने पूछा।

'इसका उत्तर आप हमसे क्यों पाना चाहते हैं?' स्वर को कुछ उद्धत करते हुए स्थविरा दासी ने कहा।

श्रेष्ठी बात की गहराई तक पहुंच गया। उसने तत्काल दरवाजा खोला। बादलों की घोर घटा एक ही क्षण में फट गई। निरभ्र आकाश में सूर्य की भांति चंदना का भाल ज्योति विकीर्ण करने लगा।

'यह क्या हुआ, पुत्री! मैंने कल्पना ही नहीं की थी कि तुम्हारे साथ कोई ऐसा व्यवहार करेगा?'

'पिताजी! किसी ने कुछ नहीं किया। यह सब मेरे ही किसी अज्ञात संस्कार का सृजन है।'

चंदना की उदात्त भावना और स्नेहिल वाणी ने श्रेष्ठी को शान्त कर दिया। वह बोला, 'मैं बहुत दुःखी हूँ पुत्री! तुम तीन दिन से भूखी-प्यासी हो।'

'कुछ नहीं, अब खा लूंगी।'

श्रेष्ठी ने रसोई में जाकर देखा, भोजन अभी बना नहीं है। भात बचे हुए नहीं हैं। केवल उबले हुए थोड़े उड़द बच रहे हैं। उसने शूर्प के कोने में उन्हें डाला और चंदना के सामने लाकर रख दिया।

'पुत्री! तुम खाओ। मैं लुहार को साथ लिये आता हूँ - इतना कहकर श्रेष्ठी घर से बाहर चला गया।

भगवान् महावीर वैशाली और कौशाम्बी के मध्यवर्ती गांवों में विहार कर रहे थे। उन्हें पता चला कि शतानीक ने विजयादशमी का उत्सव चंपा को लूटकर मनाया है। उसके सैनिकों ने जी भरकर चंपा को लूटा है और किसी सैनिक ने धारिणी और वसुमती का अपहरण कर लिया है। उनके सामने अहिंसा के विकास की आवश्यकता ज्वलंत हो उठी। वे इस चिंतन में लग गए कि हिंसा कितना बड़ा पागलपन है। उसका खूनी पंजा अपने सगे-सम्बन्धियों पर भी पड़ जाता है। कौन पद्मावती और कौन मृगावती! दोनों एक ही पिता (महाराज चेटक) की प्रिय पुत्रियां। पद्मावती का घर उजड़ा तो उससे मृगावती को क्या सुख मिलेगा? पर हिंसा के उन्माद में उन्मत्त ये राजे बेचारी स्त्रियों की बात कहां सुनते हैं? ये अपनी मनमानी करते हैं।

शक्तिशाली राजा शक्तिहीन राजाओं पर आक्रमण कर उसका राज्य हड़प लेते हैं। यह कितनी गलत परम्परा है। वे जान-बूझकर इस गलत परम्परा को पाल रहे हैं। क्या शतानीक अजर-अमर रहेगा? क्या वह सदा इतना शक्तिशाली रहेगा? कौन जानता है कि उसकी मृत्यु के बाद उसके राज्य पर क्या बीतेगा? ये राजा अहं से अंधे होकर यथार्थ को भुला देते हैं। इस प्रकार की घटनाएं मुझे प्रेरित कर रही हैं कि मैं अहिंसा का अभियान शुरू करूं।

भगवान् को फिर पता चला कि महारानी धारिणी मर गई और वसुमती दासी का जीवन जी रही है। इस घटना का उनके मन पर गहरा असर हुआ। नारी-जाति की दयनीयता और दास्य-कर्म दोनों का चित्र उनकी आंखों के सामने उभर आया। उन्होंने मन-ही-मन इसके अहिंसक प्रतिकार की योजना बना ली।

साधना का बारहवां वर्ष चल रहा था। भगवान् कौशाम्बी आ गए। पौष मास का पहला दिन। भगवान् ने संकल्प किया, 'मैं दासी बनी हुई राजकुमारी के हाथ से ही भिक्षा लूंगा, जिसका सिर मुंडा हुआ है, हाथ-पैरों में बेड़ियां हैं, तीन दिन की भूखी और आंखों में आसू हैं, जो देहलीज के बीच में खड़ी हैं और जिसके सामने शूर्प के कोने में उबले हुए थोड़े से उड़द पड़े हैं। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

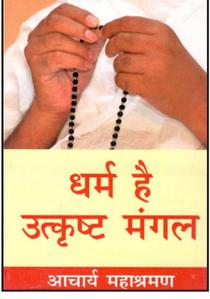
आचार्य भिक्षु युग

साध्वीश्री बीजा जी (पाली) दीक्षा क्रमांक 52

साध्वीश्री ने संयम लेकर तप, जप, स्वाध्याय आदि में निरन्तर विकास किया आपने अन्तिम समय की संलेखना के तप की तालिका प्राप्त होती है जो इस प्रकार है - 2/3, 3/3, 4/2, 5/1, 6/1, 7/1, 10/1, 15/1, 32/1 कुल तप दिन 118 और 17 दिन पारणा। अन्त में 3 दिन के अनशन में समाधि मरण को प्राप्त हुए।

- साभार: शासन समुद्र -

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण
ममत्व-विसर्जनम्
अपरिग्रहः



भारतीय- आप इतने आदर्शवादी हैं तो फिर प्रतिदिन का एक येन अपने पास क्यों रखते हैं जबकि आपका मजदूर आधा येन ही प्राप्त करता है।

मिलमालिक- आपका यह प्रश्न ठीक है। इसका उत्तर मेरे पास है। मैं यहां मजदूर बन काम करता हूँ, आधा येन तो उसका लेता हूँ। मजदूर तो समय पर अपना काम कर चले जाते हैं। मैं पीछे से हिसाब-किताब, देख-भाल का काम भी करता हूँ। आधा येन उसका लेता हूँ। जिस दिन काम नहीं करता, आधा येन सरकार के चन्दे में डाल देता हूँ।

भारतीय- यह जरूरी नहीं कि प्रतिमाह साठ येन की आमदनी हो ही। यह सरकारी नौकरी तो है नहीं, व्यापार है। इसमें नफा-नुकसान दोनों हो सकते हैं।

मिलमालिक- नुकसान का कोई कारण नहीं है। अगर नफा ज्यादा होता है तो साइकिलें सस्ती कर देते हैं जिससे कि हमारे देश का निर्यात ज्यादा हो, देश को बाहर से ज्यादा पैसा मिले।

भारतीय- आपने बीमा करवाया है क्या?

मिलमालिक- हमें बीमा कराने की कोई जरूरत ही नहीं।

भारतीय- यदि कारखाने में आग लग जाए तो आप क्या करेंगे?

मिलमालिक- आग लगेगी तो कारखाना खत्म हो जाएगा। मेरी कार्यशीलता थोड़ी ही खत्म हो जाएगी। मैं दूसरी जगह काम करूंगा। आप लोग अपने बच्चों की बहुत चिन्ता करते हो। हम लोग बच्चों को चिन्ता नहीं करते। हम जो सरकार को चन्दा देते हैं, उससे हमारे बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलेगी कि वे हमसे भी ज्यादा योग्य एवं कामयाब होंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

इस घटना से जापानी जनता का देशप्रेम, स्वार्थ त्याग एवं परिग्रह के प्रति अति आसक्ति का अभाव प्रकट होता है। यही कारण है कि जापान द्रुतगति से विकास कर रहा है।

सामाजिक जीवन में अर्थ भी एक शक्ति है, यह यथार्थ प्रतीत हो रहा है। अर्थ के आधार पर सुविधा और प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी संभव बनती है। अणुव्रत के सन्दर्भ में इतना ध्यातव्य है कि अर्थ अनर्थकारी न बने, उसका दुरुपयोग न हो तथा अर्थार्जन के साधन दूषित न हों।

अठारह पाप क्रियाओं में पांचवीं है परिग्रह। ममत्व भाव से किसी पदार्थ, प्राणी का परिग्रहण व संरक्षण परिग्रह है। स्थूल रूप से वस्तु आदि का ग्रहण न भी हो परन्तु यदि किसी के प्रति ममत्व व मूर्च्छा का भाव है तो भाव के स्तर पर तो ग्रहण ही जाता है।

परिग्रह के दो प्रकार हैं- १. अन्तरंग परिग्रह २. बाह्य परिग्रह। राग भाव अन्तरंग परिग्रह है। रागभाव से बाह्य पदार्थों का ग्रहण व संग्रह होता है, वह बाह्य परिग्रह है। प्रधानता अन्तरंग परिग्रह की ही है। उसके न होने पर बाह्य पदार्थ 'परिग्रह' संज्ञा को प्राप्त नहीं हो सकते। 'दसवेआलियं' का स्पष्ट उद्घोष है- मुच्छा परिग्रहो वुत्तो- मूर्च्छा को परिग्रह कहा गया है। उसका परित्याग अपरिग्रह है।

श्रीमद् भगवद् गीता में मूर्च्छा (आसक्ति) को श्रृंखला का सुन्दर चित्रण किया गया है-

ध्यायतो विषयान् पुंसः, सङ्गस्तेषूपजायते।

सङ्गात् सञ्जायते कामः, कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद् भवति सम्मोहः, सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।

स्मृतिप्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है। आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामनापूर्ति में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव उत्पन्न हो जाता है। मूढ़भाव से स्मृतिभ्रंश हो जाता है और स्मृतिभ्रंश हो जाने से बुद्धि-ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धिनाश हो जाने से यह पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyp@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जनवरी 2025

सप्ताह के विशेष दिन

13 जनवरी

भगवान धर्मनाथ
केवलज्ञान कल्याणक
एवं पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री कुशलजी (लसानी) दीक्षा क्रमांक 145

मुनिश्री ने तात्विक चर्चाओं की अच्छी धारणा की। तप में भी आप विशेष रूचि रखते थे। तक की तालिका इस प्रकार है- उपवास/300, 2/15, 3/3, 4/4, 5/1, 7/1, 8/1, 9/1, 11/1, 15/1।

- साभार: शासन समुद्र -

23वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ के 2900वें जन्म कल्याणक दिवस पर श्रद्धा प्रणति स्वरूप आयोजित विविध कार्यक्रम

मैसूर

पुरुषादानीय भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक दिवस मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, मैसूर में उत्साहपूर्वक मनाया गया। दिवस की शुरुआत में श्रीमद् जयाचार्य द्वारा रचित पार्श्वनाथ स्तुति का संगान मुनि भव्य कुमार जी ने किया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ के जीवन में संवेदनशीलता और करुणा का विशेष स्थान था। उन्होंने स्वयं पर आने वाले उपसर्गों को करुणा के भाव से तिरोहित किया। उनका जीवन कष्टों के निवारण और मनोबल को सुदृढ़ करने का प्रेरणास्रोत है। जैन परंपरा से जुड़े प्राचीन आचार्यों ने भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में अनेक स्तोत्रों की रचना की है, जो आज भी भक्तजनों के कष्टों को दूर करने में सहायक हैं। मुनि जयेशकुमार जी ने प्रभु पार्श्वनाथ की महिमा को 24 तीर्थकरों के बीच विशेष और अद्वितीय बताया। इस दिन के महत्व को रेखांकित करते हुए मुनि जयेशकुमार जी ने कहा कि आज मेरे अनन्य उपकारी 'शासनश्री' मुनि सुखलाल जी के प्रयाण को पांच वर्ष पूर्ण हो गए हैं। वे धर्मसंघ के एक प्रतिष्ठित संत थे, जिन्होंने अपने जनोपकारी कार्यों से हजारों-लाखों लोगों के जीवन को प्रेरित किया। मेरा भी सौभाग्य रहा कि मुझे उनके सान्निध्य में रहने और उनसे सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। मुनिश्री की षष्ठम प्रयाण तिथि पर मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता और श्रद्धा से अभिवादन करता हूँ। इस अवसर पर मनोबल वृद्धि अनुष्ठान का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न मंत्रों का सामूहिक उच्चारण और संगान किया गया। कार्यक्रम में मुनिवरों द्वारा पार्श्वनाथ स्तुति और उससे जुड़े कई मंत्रों व स्तोत्रों का संगान श्रावक समाज के साथ हुआ।

हासन

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में प्रभु पार्श्व जयंती के विशेष अनुष्ठान का कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन हासन में आयोजित किया गया। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति में मंगल गान प्रस्तुत किया गया। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि, क्षमता और अनुकूलता के अनुसार साधना के मार्ग का चयन कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण आयाम है- जप

अनुष्ठान। तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्म जयंती का दिन मंत्रों की सिद्धि और सफलता के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। साध्वी जी ने बताया कि वज्रपंजर स्तोत्र रक्षा कवच, भौतिक सिद्धि, आध्यात्मिक समृद्धि और वैभव को प्राप्त कराने वाला है। मंत्रों का उच्चारण हमारे चारों ओर सशक्त ऊर्जा का निर्माण करता है, जिससे हमारी शक्तियां जागृत होकर सही दिशा में नियोजित हो सकती हैं। साध्वी मार्दवश्री ने अनुष्ठान के दौरान स्वर विज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्वर तीन प्रकार के होते हैं - चंद्र, सूर्य और सुषुम्ना। जब सुषुम्ना स्वर सक्रिय होता है, तब साधक अंतर्मुखता की ओर अग्रसर होता है। जप अनुष्ठान का प्रारंभ चंद्र स्वर से करने से सफलता प्राप्त होती है। मुद्रा विज्ञान का अभ्यास भी अनुष्ठान में सहायक होता है। मुद्राओं के माध्यम से मानसिक स्थिरता पाई जा सकती है और अनेक रोगों तथा दुर्बलताओं को दूर किया जा सकता है। शंख मुद्रा के द्वारा मन की चंचलता को शांत कर अनुष्ठान में तल्लीनता लाई जाती है। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने लाल चुनरी और सफेद परिधान धारण कर स्वस्तिक के आकार में मंत्र साधना की। इस कार्यक्रम में हासन, चिकमंगलुर, होलेनरसीपुर, मंड्या आदि आसपास के क्षेत्रों से समाज के अनेक लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर लगभग 14 उपवास और 40 एकासन भी हुए। चिकमंगलुर के श्रावकों के निवेदन पर साध्वीश्री ने 2025 का मर्यादा महोत्सव चिकमंगलुर में आयोजित करने की स्वीकृति प्रदान की।

निर्माण नगर, जयपुर

'शासनश्री' साध्वी मधुरेखाजी के सान्निध्य में जयपुर के निर्माण नगर में भगवान पार्श्वनाथ की जन्म जयंती का कार्यक्रम उत्साह के साथ मनाया गया। जन्म जयंती के अवसर पर 27 दिनों तक प्रतिदिन 1 घंटा जप अनुष्ठान रखा गया जिसमें लगभग 175 भाई-बहनों ने भाग लिया। भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में साध्वी वृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। साध्वीश्री ने उपसर्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान करवाया। साध्वी मधुरेखा जी ने कहा- भगवान पार्श्व का अवतरण मानव जाति के कल्याण के लिए हुआ। उन्होंने दर्श होते नाग-नागिन को नमस्कार महामंत्र सुनाया, वे संसार में धरणेन्द्र-पद्मावती के नाम से प्रख्यात हैं। भगवान

पार्श्व के नाम स्मरण से कष्ट व उपद्रव दूर हो जाते हैं। इसका प्रमाण है उपसर्गहर स्तोत्र। इस स्तोत्र का स्मरण करते ही चित्त समाधि की अनुभूति होती है।

टेगौर नगर, जयपुर

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में टेगौर नगर स्थित सेठिया हाउस में भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक अवसर पर विशेष जप अनुष्ठान आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा - तेइसवें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ का इस पंचम काल में विशेष प्रभाव है। संभवतः सबसे अधिक मंदिर भगवान पार्श्वनाथ के ही हैं। महाकरुणावान राजकुमार पार्श्व ने अपने अवधिज्ञान से नाग और नागिन को जलते हुए देखा। उन्होंने उस जलते नाग-नागिन को बाहर निकलवाया और उन्हें नमस्कार महामंत्र सुनाया। वही नाग-नागिन अपनी आयु पूर्ण कर धरणेन्द्र और पद्मावती के रूप में जन्म लेते हैं और आज भी भगवान पार्श्वनाथ के प्रति कृतज्ञ हैं। ऐसा अनुभव किया गया है कि भगवान पार्श्वनाथ के भक्तों की वे मन से सहायता करते हैं। हम यही कामना करते हैं कि एक दिन हम भी जिनस्वरूप को प्राप्त कर जन्म-मरण की परंपरा का अंत करें। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित 'उवसग्गहर स्तोत्र' भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्तोत्र है। आज भी हजारों लोग इसकी विशेष साधना और आराधना करते हैं। पौष शुक्ला दशमी से प्रारंभ होकर 27 दिन तक किया जाने वाला यह अनुष्ठान अत्यंत फलदायी हो सकता है। 27 दिनों तक प्रतिदिन एक माला बीजमंत्र का जप करें और 27 बार उवसग्गहर स्तोत्र का पाठ करें। जप के साथ यदि तप भी किया जाए, तो यह अनुष्ठान सौ गुणा अधिक प्रभावशाली हो जाता है। प्रत्येक भाई-बहन श्रद्धा और भक्ति के साथ नियमित और निस्वार्थ जप-साधना करें और वीतरागता की ओर अग्रसर बनें। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वशाजी और साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने गीत प्रस्तुत कर वातावरण को पार्श्वमय बना दिया।

कोलीवाड़ा

तेरापंथ सभा भवन, सायन कोलीवाड़ा में 23वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक के अवसर पर आयोजित अनुष्ठान में श्रद्धालुओं को संबोधित करते

हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रजाजी ने कहा - जिसके द्वारा कल्याण, अर्थात् शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य प्राप्त किया जाता है, उसे कल्याणक कहा जाता है। तीर्थकरों के कल्याणक शारीरिक और आत्मिक शांति एवं शक्ति प्रदान करते हैं। भगवान पार्श्वनाथ एक शक्तिसंपन्न आत्मा के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्हें 'पुरुषादानीय' कहा गया है। बौद्ध धर्म प्रवर्तक बुद्ध भी पार्श्वनाथ परंपरा में दीक्षित हुए थे। तीर्थकरों के कल्याणक से नरक के जीव भी आनंदित होते हैं। साध्वीश्री ने कहा- भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक दिवस पर विशिष्ट साधना करनी चाहिए। 'उवसग्गहर स्तोत्र' की साधना के संदर्भ में ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि यह स्तोत्र विशिष्ट घटनाओं के साथ प्रकट हुआ है। हठयोग प्रदीपिका आदि ग्रंथों में भी पार्श्वनाथ परंपरा का उल्लेख मिलता है। अनेक तपस्वी तीर्थकरों के पाँच कल्याणकों को आधार मानकर तपस्या करते हैं। तपस्या, विजातीय तत्वों को दूर कर जीवन को शुद्ध बनाती है। भगवान पार्श्वनाथ ने कर्मों का क्षय कर सिद्धत्व को प्राप्त किया। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा और आदर्श है। उन्होंने अपने ज्ञान से अनेक जीवों का उद्धार किया। हर तीर्थकर के आराधक देव-देवियाँ होते हैं। भगवान पार्श्वनाथ के देव धरणेन्द्र और देवी पद्मावती हैं। वाराणसी की ऐतिहासिक भूमि पर जन्मे राजा अश्वसेन और महारानी वामा देवी के पुत्र भगवान पार्श्वनाथ की आराधना से विघ्नों का विनाश संभव है। साध्वीश्री ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को विशिष्ट अनुष्ठान करवाया। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुल्यशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी और साध्वी शौर्यप्रभाजी ने सामूहिक रूप से 'पार्श्वनाथ नमो नमः' गीत प्रस्तुत किया। साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभाजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति में कहा कि भगवान पार्श्वनाथ साधना के शिखर पुरुष रहे हैं। उनका स्मरण बाधाओं का हरण करता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी अतुल्यशाजी ने किया।

के. आर. नगर

साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में के.आर. नगर के जैन तेरापंथ चावत भवन में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक दिवस बड़े उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभाजी ने कहा - तीर्थकर इस संसार

के सर्वोच्च महामानव होते हैं। उनका इतिहास बेजोड़ और प्रेरणादायक होता है। उनके चरणों के प्रभाव से शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते हैं। तीर्थकरों के आभामंडल में विरोध और द्वेष की भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। इसी श्रृंखला में भगवान पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थकर के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उन्होंने अहिंसा, सत्य और समता का पाठ पढ़ाया। हमें भी उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए और इसे सफल बनाना चाहिए। साध्वी उन्नतयशाजी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तीर्थकरों का जीवन संपूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा है। साध्वी वृन्द ने सामूहिक रूप से गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में लगभग 1 घंटे में 'ऊँ पार्श्वनाथाय नमः' का सवा लाख से भी अधिक जप अनुष्ठान संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त लगभग 70 व्यक्तियों ने आर्यबिल तप का सामूहिक अनुष्ठान किया। इसमें जैन परिवारों के साथ-साथ राजस्थानी समाज ने भी सक्रिय सहयोग दिया। कार्यक्रम में हिरियुर, होलेनरसिपुर, चामराजनगर, एच.डी. कोटे, हुनसूर, के.आर. पेर, नंजनगुड और नागपुर सहित लगभग 9 क्षेत्रों से श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। प्रथम चरण में एक भव्य भक्त रैली निकाली गई, जिसमें ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर झांकियाँ प्रस्तुत कीं। महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने एक नाटिका का प्रदर्शन किया। महेंद्र खंडेलवाल, तेजराज चौपड़ा, देवराज चौपड़ा, रमेश जैन, करिश्मा चावत, पुष्पा बोहरा आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की। स्वागत भाषण मनीष बोहरा और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सिद्धार्थ चावत ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी रम्यप्रभाजी ने किया।

नोखा

भगवान पार्श्वनाथ की साधना विशिष्ट थी। उनके नाम का स्मरण, जाप चमत्कारी है। उवसग्गहर स्तोत्र का नियमित जाप मनोयोग से करने से मन वांछित फल प्राप्त होता है। यह विघ्न निवारक, मंगलकारी, कल्याणकारी है। उपरोक्त विचार सामूहिक अनुष्ठान करवाते हुए 'शासनगौरव' साध्वी राजीमती जी ने व्यक्त किए। साध्वी पुलकितयशाजी ने क्रोध, मान, माया, लोभ से बचकर सहज शान्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। सैकड़ों भाई-बहनों ने सामूहिक अनुष्ठान में भाग लिया।

‘समृद्ध राष्ट्रीय योजना’ में संस्कारशाला का सफल आयोजन

इचलकरंजी।

तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा ‘समृद्ध राष्ट्रीय योजना’ कार्यशाला के अंतर्गत संस्कारशाला का आयोजन साई इंग्लिश स्कूल में किया गया। कार्यक्रम का मुख्य विषय 'Healthy Food Habits' और 'Social Media का सही उपयोग' था।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और महाप्राण ध्वनि से हुई। नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण महिला मंडल की अध्यक्ष शिल्पा बाफना और मंत्री मीना भंसाली ने करवाया, जबकि महाप्राण ध्वनि का प्रयोग कन्या मंडल प्रभारी रजनी पारख ने करवाया।

कार्यशाला का स्वागत भाषण महिला मंडल की अध्यक्ष शिल्पा बाफना ने दिया। उन्होंने उपस्थित

बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों को कार्यक्रम के उद्देश्यों और महत्व की जानकारी दी। सहमंत्री नीता छाजेड़ ने बच्चों को पोषणयुक्त आहार के महत्व पर विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि हमारे आहार में मिनरल्स, कैल्शियम, प्रोटीन और न्यूट्रिशन भरपूर मात्रा में होना चाहिए।

उन्होंने फल, हरी सब्जियां और मिलेट्स को आहार में शामिल करने पर जोर दिया और जंक फूड से बचने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि जंक फूड शरीर के लिए हानिकारक है और यह मोटापा, उच्च रक्तचाप और अन्य कई बीमारियों का कारण बन सकता है।

मंत्री मीना भंसाली ने बच्चों को सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है, जो संचार और विचारों के आदान-

प्रदान में सहायक है। उन्होंने यह भी समझाया कि डिजिटल मार्केटिंग के बढ़ते प्रभाव के कारण सोशल मीडिया का सही और संतुलित उपयोग करना आवश्यक है।

कार्यक्रम के दौरान 'Healthy Food Habits' और 'Social Media के सही उपयोग' विषयों पर एक ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में लगभग 35 बच्चों ने भाग लिया। विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर पुरस्कृत किया गया। बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप उपहार भी दिए गए।

अध्यक्ष शिल्पा बाफना ने स्कूल के प्रिंसिपल, स्टाफ और बच्चों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में लगभग 95 बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मीना भंसाली ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह हुआ संपन्न

रोहतक।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या, 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी और साध्वी संगीतश्रीजी का रोहतक में आध्यात्मिक मिलन बड़े ही भव्य और आनंदमय वातावरण में संपन्न हुआ।

साध्वी संगीतश्रीजी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा - आज मुझे साध्वीश्री से मिलकर अपार प्रसन्नता हो रही है। आपका स्नेह और वात्सल्य पाकर हम अपने भीतर आनंद और नई ऊर्जा का अनुभव कर रहे हैं। हमारा यह मिलन नारंगी के बजाय खरबूजे के समान है।

नारंगी बाहर से एक जैसी दिखती है, लेकिन अंदर अलग होती है, जबकि खरबूजा बाहर से भले ही अलग-अलग

लकीरों वाला दिखे, पर भीतर से एक जैसा होता है। इसी प्रकार, तेरापंथ धर्मसंघ में सभी एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं। आज माईतों के पास आकर हमारी सारी थकान मिट गई है। साध्वी सुमनप्रभाजी की सरलता, सहजता और श्रमशीलता अद्वितीय है। उनका वात्सल्य हमेशा बना रहे।

'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा - आज साध्वी संगीतश्रीजी से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

साध्वीश्री श्रमशील और तपस्वी साध्वी हैं। आपने दिल्ली के शाहदरा में सफलतम चातुर्मास संपन्न किया और अपनी प्रभावशाली वाणी एवं प्रवचन शैली से जन-जन में नई जागृति लाई। तप, त्याग और सेवा के माध्यम से आपने समाज में प्रेरणा फैलाई है।

आपका सहज और सरल व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली है।

साध्वी सुरेखाश्रीजी और अन्य साध्वियों ने गीत से स्वागत किया। साध्वी शांतिप्रभाजी और अन्य साध्वियों ने मधुर गीत के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर पूर्वी दिल्ली, भिवानी और अन्य क्षेत्रों से भाई-बहन उपस्थित थे।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, उपाध्यक्ष बाबूलाल जैन, रणजीत जैन, अशोक जैन, पवन जैन और शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र जैन सहित अन्य श्रावकों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की अध्यक्ष वंदना जैन और रोहतक सभा अध्यक्ष डॉ. आर. बी. जैन ने साध्वीश्री का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन लोकेश जैन ने किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

भिवानी।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित विश्व ध्यान दिवस एवं प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अवसर पर प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षा

वाहिनी भिवानी द्वारा ध्यान की कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन लोहड़ बाजार में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षा गीत के संगान से हुआ। प्रवक्ता उपासिका मधु जैन ने

ध्यान का प्रयोग करवाया। प्रेक्षावाहिनी की संयोजिका मंजू जैन ने प्रेक्षा ध्यान के बारे में जानकारी दी एवं ऑनलाइन एप के बारे में बताया।

सहसंयोजिका सुमन जैन ने सबके प्रति आभार प्रकट किया।

नव वर्ष 2025 के अवसर पर

मंगल प्रभात मन भाए

● साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा एवं साध्वी सौभाग्ययशा ●

खुशियों के घन मंडराए, मंगल प्रभात मन भाए, नव वर्ष की शुभ बेला में, हम शुभ संकल्प सजाएँ।।

1. नया साल हो सबको मुबारक, सारी दुनिया गाएँ, उछल रहे हैं हर्ष फव्वारे, मिल-जुल मोद मनाएँ। हर दिन को नया बनाएँ, हर पल को सफल कर पाएँ।।

2. नया जोश हो होश नया हो, नई सोच हो सबकी, शुभ चिन्तन-मंथन से कर लें, शुद्धि अन्तर्मन की। सद्गुण सौरभ फैलाएँ, मैत्री के फूल खिलाएँ।।

3. सर्वे भवन्तु सुखिनः जीवन हो सबका सुखमय, रहें स्वस्थ, आत्मस्थ मस्त हो सर्वे सन्तु निरामय। प्रेक्षा का ध्यान लगाएँ, ज्योतिर्मय सब बन जाएँ।।

4. शांत-सुखद जीवन यदि जीना व्यसनों से है बचना, स्मोकिंग, ड्रिंकिंग हुक्का डांसिंग, फैशन में नहीं बहना, अपनी संस्कृति अपनाएँ, अपने घर को महकाएँ। वृद्धों का मान बढ़ाएँ, मंगल आशीर्वर पाएँ।।

5. जिन-शासन, भैक्षवगण नन्दनवन हमने है पाया, महावीर की वाणी, महाश्रमण गुरुवर का साया। अणुव्रत भवन सरसाए, दिल्ली वासी हर्षाएँ।।

तर्ज - ये पर्दा हटा दो

बेहतर लाइफ के लिए चमत्कारी आदतें

दिल्ली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, दिल्ली ने हिंदी भवन, नई दिल्ली में 'बेहतर लाइफ के लिए चमत्कारी आदतें' विषय पर विख्यात मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. उज्ज्वल पाटनी के कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दो घंटे के सेशन में 200 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। डॉ. पाटनी ने जीरो टेक्नोलॉजी स्लॉट, एक दिन-एक गोल और बेहतर जवाब देने की कला जैसी आदतों को अपनाकर जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के व्यावहारिक तरीके साझा किए। उनकी प्रभावशाली शैली ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र और टीपीएफ के परिचय वीडियो के साथ हुई। टीपीएफ नॉर्थ जोन के पूर्व अध्यक्ष श्रील लुंकर ने डॉ. पाटनी का परिचय

दिया। दिल्ली शाखा की अध्यक्ष कविता बरडिया ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए टीपीएफ के विजन पर प्रकाश डाला। केएलजे ग्रुप के चेयरमैन के. एल. जैन पटावरी ने भी सभी लोगों का मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम में टीपीएफ गौरव संपत नाहटा, मन्नालाल बैद, विजय चौपड़ा, हरिश आंचलिया, महिला मंडल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, पुष्पा बंगानी, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुव्रत न्यास के रमेश कांडपाल और अन्य प्रमुख व्यक्तित्व उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन टीपीएफ दिल्ली के सेक्रेटरी हिमांशु कोठारी और ज्वॉइंट सेक्रेटरी प्रीति दुगड़ ने किया। अंत में टीपीएफ दिल्ली के वाइस प्रेसिडेंट कमल रामपुरिया ने आभार व्यक्त किया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।
— आचार्य श्री महाश्रमण

मीट एन ग्रीट कार्यक्रम आयोजित

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद ने द्वारा 'मीट एन ग्रीट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत जैन और पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ सदस्य प्रेरणा सुराना द्वारा मंगलाचरण से हुई। हैदराबाद ब्रांच के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने सभी अतिथियों और सदस्यों का स्वागत करते हुए संस्था के उद्देश्यों और इस वर्ष की गतिविधियों पर प्रकाश

डाला। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोट ने टीपीएफ के विभिन्न प्रोजेक्ट्स, जैसे आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर, शिक्षा सहयोग योजना आदि की जानकारी दी। उन्होंने 'इन्वॉल्व यू मैटर' थीम के महत्व को रेखांकित किया। पूर्व अध्यक्ष नवीन पारख ने हैदराबाद की उपलब्धियों और राष्ट्रीय टीम में इसकी प्रभावी भूमिका की सराहना की।

कार्यक्रम का उद्देश्य प्रोफेशनल्स के बीच संवाद, सहयोग और एकता को बढ़ावा देना था। इसमें लगभग 70 सदस्यों ने भाग लिया। राष्ट्रीय टीम के सदस्य नरेश कठोटिया, मोहित बैद,

ऋषभ दुगड़, दीपक संचेती और रक्षिता बोहरा ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। स्थानीय टीम के सदस्यों में निवर्तमान अध्यक्ष पंकज संचेती और पदाधिकारी गण भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में वर्ष 2025 का कैलेंडर विमोचन राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोट और टाइटल स्पॉन्सर शिवराज लक्ष्मीचंद जैन द्वारा किया गया। संयोजक वर्षा बैद, अनुष बंबोली और डॉ. श्वेता मेहता ने कार्यक्रम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संचालन वर्षा बैद ने और आभार ज्ञापन मंत्री निखिल कोटेचा ने किया।

आचार्य तुलसी मेमोरियल व्याख्यानमाला का आयोजन

चेन्नई।

मद्रास विश्वविद्यालय जैनोलॉजी विभाग और तेरापंथ ट्रस्ट, ट्रिप्लिकेन के संयुक्त तत्वावधान में 'आचार्य तुलसी मेमोरियल एंडोवमेंट व्याख्यानमाला 2024-2025' का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. बी. जीवगन ने 'तमिल जैन साहित्य में जैन दर्शन के सर्वेक्षण' विषय पर अपने वक्तव्य में जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

डॉ. जीवगन ने कहा कि दुर्लभ मनुष्य

जीवन का उद्देश्य संसार से मुक्ति होना चाहिए। उन्होंने कर्मवाद के सिद्धांतों, परिग्रह के त्याग, अहिंसात्मक जीवन और संयममय आचरण को अपनाने पर जोर दिया। साथ ही, उन्होंने आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रतों और लोक कल्याणकारी अवदानों की चर्चा की।

तमिल जैन साहित्य के गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने तिरुक्कुरल की रचना को जैनआचार्य कुंदकुंद से जोड़ा।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। जैनोलॉजी विभाग की प्रमुख,

प्रो. प्रियदर्शना जैन ने मुख्य वक्ता का परिचय दिया। श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी मुख्य वक्ता ने किया। माला कात्रेला ने तमिल अभिभाषण का हिंदी में अनुवाद किया।

आयोजन में प्यारेलाल पितलिया, तनसुखलाल नाहर, अशोक खतंग, संतोषकुमार धाडीवाल, अशोककुमार लुंकड़ सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. प्रियदर्शना जैन ने किया, और ट्रस्ट उपाध्यक्ष विजयकुमार गेलडा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बोलती किताब

सुख ज्यादा या दुःख



भगवान महावीर की वाणी में एक शब्द आता है-अत्तकडे दुक्खे। दुःख आत्मकृत है, परकृत नहीं है। वह अनपेक्षित है, फिर भी व्यक्ति के स्वयं के द्वारा निर्मित है। यहां फिर एक प्रश्न होगा-अगर अनपेक्षित है, कोई दुःख को नहीं चाहता तो फिर दुःख का निर्माण क्यों करता है? दुःखी क्यों बनता है?

किसी भोगी को दुःखी बनाया जा सकता है और वह बनता भी है, लेकिन त्यागी को कोई दुःखी नहीं बना सकता। जो सुख-सुविधा को किसी भी क्षण छोड़ने के लिए तैयार है, उसे कोई दुःखी कैसे बना सकता है? वह प्राप्त सुविधा के छिन जाने पर दुःखी नहीं होगा।

शाश्वत या ऐकांतिक सुख कोई मामूली सुख नहीं है। जब क्षण भर का सुख ही आदमी को बहुत आनंद की अनुभूति करा जाता है तो चिरकाल का सुख शाश्वत सुख की तो बात ही क्या। यह सुख आने के बाद फिर कभी जाता नहीं।

आज आसक्ति के चक्र में फंसा आदमी व्यथा का अनुभव कर रहा है। पैसे ने मानवीय संवेदनाओं को शून्य की स्थिति में पहुंचा दिया है। पैसा है तो बड़े से बड़े हॉस्पिटल में आपका इलाज हो जाएगा। पैसे नहीं है तो ऑपरेशन की टेबल से आपको वापस भेज दिया जाए।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

स्वतंत्रता में किया...

त्याग में सुख का वास है, जबकि हल्के स्तर के राग में भी दुःख हो सकता है। किसी विषय, वस्तु, आदि के प्रति अनावश्यक राग, लालसा हो जाए और आदमी को उसे वह प्राप्त न हो पाए तो वह आदमी दुःखी बन सकता है। त्याग अत्यंत उच्च और महान है। साधु का त्याग उसकी सबसे बड़ी संपत्ति होती है। कामना के साथ दुख जुड़ा रह सकता है। इसलिए कामना न करें, कार्य करें। कार्य में निष्कामता होनी चाहिए। दान करते समय नाम और प्रशंसा की भावना न रखें। त्याग का मार्ग ही कल्याण का मार्ग है। विद्यालय में बच्चों को ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार देने का प्रयास निरंतर होना चाहिए। आदमी को अपने जीवन में त्याग की भावना को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने अपनी सौराष्ट्र यात्रा के संदर्भ में कहा कि गुरुदेव तुलसी अपनी यात्रा के दौरान इस क्षेत्र में सन् 1967 में पधारे और अब सन् 2024 में मेरा आना हुआ है। लगभग 57 वर्ष का अंतराल हो गया। इस सौराष्ट्र की धरा पर आने का अवसर मिला है। सौराष्ट्र की धरा पर भी त्याग की चेतना बनी रहे। नीलकंठ विद्यालय की ओर से लालाभाई पटेल ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावना व्यक्त की। सौराष्ट्र तेरापंथी सभा के मंत्री मदन गंगावत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कांफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह आयोजित

गुवाहाटी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, गुवाहाटी द्वारा आयोजित 7 दिवसीय कांफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (सीपीएस) कार्यशाला का तेरापंथ धर्मस्थल में दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता तेयुप गुवाहाटी के अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी ने की। इस समारोह के मुख्य अतिथि आसाम डाउन टाउन यूनिवर्सिटी की असिस्टेंट प्रोफेसर सायनिका डेका शर्मा, विशिष्ट अतिथि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गुवाहाटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन जम्मड़ एवं निर्मल सामसुखा, नेशनल ट्रेनर मनीषा सेठिया एवं संयोजक कमलेश रांका व नवीन मालू रहे। तेयुप मंत्री पंकज सेठिया ने बताया कि कार्यशाला दो सत्रों में शुरू हुई। अलग-अलग सत्रों में मोनिका जैन, पिंकी टेबा एवं मनीषा सेठिया ने संभागियों को प्रशिक्षित किया। इसमें कुल 48 संभागी थे। सीपीएस ट्रेनरों ने 7 दिनों में संभागियों का सबसे पहले स्टेज पर बोलने के डर को दूर किया। इसके बाद स्टेज प्रोटोकॉल, विभिन्न तरह के भाषण बनाने एवं प्रस्तुति करने की कला सिखाई गई। इस कार्यशाला की विशेष बात यह रही कि इसमें प्रतिभागियों को प्रैक्टिकल एवं मॉक पार्लियामेंट के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम प्रायोजक निर्मल निलेश लविक सामसुखा रहे। प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संपूर्ण तेयुप टीम का सराहनीय योगदान रहा।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का हुआ आयोजन

महरोली।

अध्यात्म साधना केंद्र, महरोली के महाश्रमण भवन में तेरापंथ महिला मंडल, दक्षिण दिल्ली द्वारा समायोजित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुत्रताजी ने कहा- प्रेक्षा ध्यान का ध्येय सूत्र है- 'संपिक्खए अप्पग मप्पणं' अर्थात् आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो। मन के स्तर पर होने वाली अवस्थाओं को देखो। भाव के स्तर पर होने वाले आन्तरिक परिवर्तन को देखो। स्थूल चेतना के द्वारा सूक्ष्म चेतना को देखो। इसलिए इस पद्धति का नाम

प्रेक्षा ध्यान रखा गया है। इसके अंग हैं- कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, अंतर्यात्रा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, लेश्या ध्यान, भावना, शरीर प्रेक्षा आदि। इन प्रयोगों के द्वारा आत्मा के निकट पहुंचा जा सकता है। कार्यशाला का प्रारंभ साध्वी कार्तिकप्रभा जी एवं साध्वी चिन्तनप्रभा जी द्वारा प्रेक्षागीत से किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग एवं संक्षिप्त वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संयोजन वर्षा जैन ने किया। कार्यशाला में 30 महिलाओं ने भाग लिया। दक्षिण दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष शिल्पा जैन ने धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापित की।

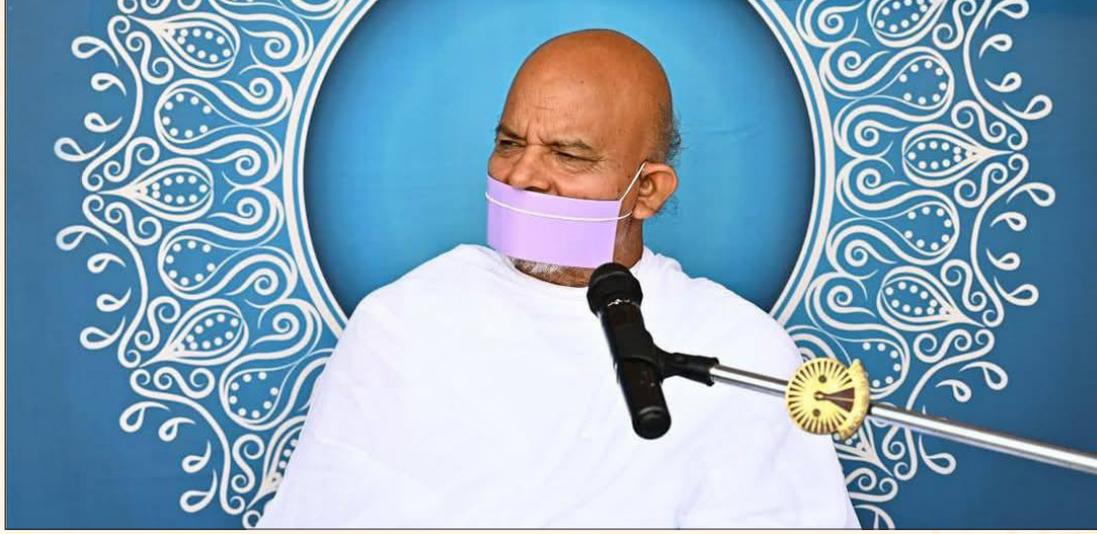
आत्म युद्ध से पाएं मोहनीय कर्म पर विजय : आचार्यश्री महाश्रमण

अरणेज।

24 दिसम्बर, 2024

भैक्षवगण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ अरणेज के मेरू मानतुंग भव्य धाम में पधारे। तेरापंथ के अधिशास्ता ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रों में अनेक प्रकार की बातें कही गई हैं। आध्यात्मिक ग्रंथों में हमें आत्मा के मार्गदर्शन का अवसर मिलता है। संसार में युद्ध की चर्चा सामान्य है, परंतु धर्मशास्त्र में आत्म-युद्ध करने का निर्देश दिया गया है और बाह्य युद्ध से निवृत्ति का संदेश दिया गया है।

पूज्यवर ने कहा - बाह्य युद्ध से हमारा कोई प्रयोजन नहीं। भीतर का युद्ध करें। तीर्थकरों ने आत्म साधना के द्वारा ही विजय प्राप्त की है। भगवान ऋषभ ने सांसारिक जीवन जीते हुए समाज को दिशा दी। एक राजनेता के रूप में कार्य करते हुए, वे धर्म नेता-तीर्थकर बन गए। तीर्थकरों की देशना हमें मार्गदर्शन और संदेश



प्रदान करती है।

तीर्थकर तो वर्तमान में नहीं हैं, लेकिन आगम वांगमय और ग्रंथों के माध्यम से उनकी वाणी उपलब्ध है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि अपने से युद्ध करो। आत्मा पर कर्मों का कब्जा है, और इन कर्मों से युद्ध करना आवश्यक है। विशेष रूप से मोहनीय कर्म, जो आठ कर्मों में सेनापति है, से संघर्ष करना चाहिए। मोहनीय कर्म से लड़ने के लिए

आध्यात्मिक साधनों की आवश्यकता है। क्रोध, मान, माया और लोभ मोहनीय कर्म के अंग हैं। इनको जीतने के लिए चार शस्त्र बताए गए हैं:

1. उपशम से गुस्से को शांत करें।
2. मार्दव से अहंकार को समाप्त करें।
3. आर्जव से छल-कपट को त्यागें।
4. संतोष से लोभ को जीतें।

पूज्यवर ने समझाया कि इन चार शस्त्रों का उपयोग कर मोहनीय कर्म पर

विजय प्राप्त की जा सकती है। आत्म-युद्ध का यह प्रयास इस जन्म में पूरी सफलता न भी लाए, तो अगले जन्म में इसका परिणाम मिल सकता है। वर्तमान मनुष्य जन्म में धर्म की साधना करें। संवर, निर्जरा, जप, तप, त्याग और प्रत्याख्यान मोहनीय कर्म को हल्का करने के प्रमुख साधन हैं।

जब तक सफलता न मिले, आत्म-युद्ध जारी रखना चाहिए। पूज्यवर के स्वागत में खेड़ ब्रह्मा से परेशभाई पटेल ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक समारोह

चेम्बूर, मुंबई। भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पर मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में महामंगल मंत्रानुष्ठान का प्रभावी कार्यक्रम समायोजित हुआ। कार्यक्रम का श्रीगणेश मुनि श्री के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। मुनि कुलदीप कुमार जी ने अपने वक्तव्य में मंत्रों की उपयोगिता को बताते हुए श्रावकों का मूल्यांकन किया। मुनि मुकुल कुमार जी ने 1800 साल पुराने जैन धर्म के मंत्रवेत्ता आचार्यों द्वारा निर्मित मंत्रों का अनुष्ठान करवाया। मुनि मुकुल कुमार जी ने वास्तु के रहस्यमय सूत्र भी बताए। चेम्बूर सभा अध्यक्ष रमेश धोका एवं मुंबई सभा अध्यक्ष माणक धींग ने अपने विचार व्यक्त किये। विमल सोनी ने आभार व्यक्त किया।

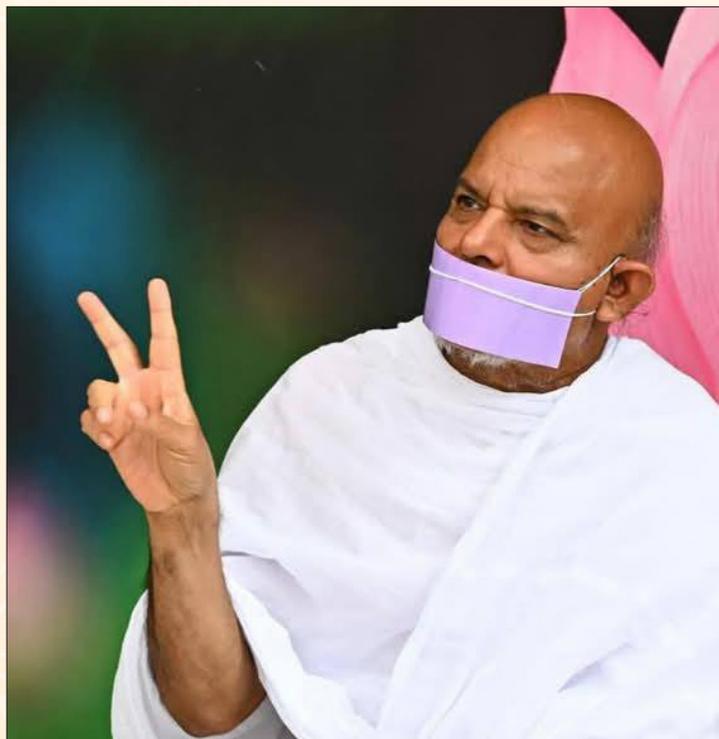
निश्चय में वीतरागता और सम्यक्त्व से है कल्याण संभव : आचार्यश्री महाश्रमण

वेजलका।

23 दिसम्बर, 2024

जिन शासन के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी का वेजलका स्थित प्राथमिकशाला में मंगल पदार्पण हुआ। पूज्यवर ने अपनी मंगल देशना में फरमाया कि अध्यात्म के मार्ग में समर्पण और भक्ति का विशेष महत्व है। व्यक्ति जिनको अपना आराध्य मानता है, उनके प्रति भक्ति भाव होना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि जैन शास्त्र में नमस्कार महामंत्र एक सुप्रसिद्ध महामंत्र है, जिसे छोटे-छोटे बच्चों को भी याद कराया जाता है। इसमें पाँच पद हैं और प्रत्येक के आगे 'णमो' लगा हुआ है। ये पाँचों पद आराध्य और वंदनीय हैं। नमस्कार महामंत्र में जिनके प्रति भक्ति प्रकट की जाती है, वे वीतरागता से जुड़े हुए हैं। तीर्थकर पूर्णतया वीतरागी होते हैं, सिद्ध भी वीतरागता को प्राप्त कर चुके हैं। आचार्य उनके प्रतिनिधि हैं, उपाध्याय ज्ञानमूर्ति और चारित्र से युक्त होते हैं। साधु भी वीतरागता के साधक होते हैं।



ज्ञान और आचरण दोनों का जीवन में विशेष महत्व है। वीतरागता के साधक और वीतराग की वाणी का पाठ पढ़ाने वाले श्रद्धा और भक्ति का केंद्र होते हैं। पूज्यवर ने फरमाया कि भक्ति भीतर से

होनी चाहिए, पाँचों पदों के प्रति अंतरंग भक्ति होनी चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि निश्चय और व्यवहार का बड़ा महत्व है। यदि निश्चय में साधुत्व नहीं आया, और व्यक्ति अभव्य

है, तो चाहे कितनी भी साधना कर ले, मोक्ष प्राप्त नहीं होगा। परंतु यदि निश्चय में साधुत्व आ गया, क्षीण मोह की वीतरागता आ गई, तो मोक्ष सुनिश्चित है।

व्यवहार के दृष्टिकोण से क्रियाएं महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन यदि निश्चय में वीतरागता और सम्यक्त्व आ जाए, तो कल्याण संभव है। उन्होंने समझाया कि बाहरी आचरण और भीतर की अवस्था में भिन्नता हो सकती है। अभव्य व्यक्ति भले ही आचार्य या साधु बन जाए और नौ ग्रैवेयक तक चला जाए, लेकिन मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

आचार्यश्री ने प्रेरणा दी कि हमारा निश्चय सम्यक्त्व से परिपूर्ण होना चाहिए। भीतर में शांति और समर्पण हो। हमारी भक्ति यथार्थ और सिद्धांत के प्रति हो। नियम पालन में निष्ठा और जागरूकता होनी चाहिए। थोड़ा सहन कर भी नियम को निभाने का प्रयास करें।

प्राथमिक शाला से विजयभाई बाघेला एवं जयसिंह भाई ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक समारोह

दालखोला। मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ठाणा-२ के सान्निध्य में दालखोला (बंगाल) स्थित तेरापंथ सभा भवन भगवान पार्श्वनाथ का 2900वां जन्म कल्याणक दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। तत्पश्चात मुनि विकास कुमार जी ने पार्श्व स्तुति से मंगलाचरण किया। भाईयों एवं बहनों ने सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी।

मुनि आनंद कुमार जी ने उपसर्गहर स्तोत्र एवं मंत्र अनुष्ठान संपन्न कर अपने वक्तव्य में कहा कि जैन धर्म के 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी (वाराणसी) के राजा काश्यप गोत्रीय अश्वसेन तथा रानी वामादेवी के घर पौष कृष्ण दशमी को हुआ था। भगवान की वाणी के अनुसार रागी मनुष्य कभी पूर्ण अहिंसक नहीं बन सकता, उसके लिए वीतरागी बनना आवश्यक है। हम भाव हिंसा से बचकर ही द्रव्य हिंसा से स्वतः बच सकते हैं।

भगवान पार्श्वनाथ ने किया अनगिनत आत्माओं का कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

बगोदरा।

25 दिसम्बर, 2024

पौष कृष्ण दशमी, भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक दिवस। आर्हत वाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमणजी का बगोदरा के नवकार धाम तीर्थ परिसर में पदार्पण हुआ। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्यवर ने कहा कि लोग्स पाठ में 24 तीर्थकरों की स्तुति की गई है। इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र के तेईसवें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ हुए। तीर्थकर समान होते हैं, क्योंकि उनके चार घाति कर्म समाप्त हो जाते हैं। वे तीर्थ की स्थापना करते हैं, और अंततः उनके चार अघाति कर्म भी नष्ट हो जाते हैं। एक क्षेत्र में एक समय में एक ही तीर्थकर होते हैं; दो तीर्थकर एक साथ नहीं होते। लेकिन आचार्य अनेक हो सकते हैं।

पूज्यवर ने भगवान पार्श्वनाथ के जन्म की घटना का उल्लेख करते हुए फरमाया कि वाराणसी नगरी उस दिन धन्य हो गई जब कुमार पार्श्वनाथ ने



जन्म लिया। राजकुमार पार्श्व ने गृहस्थ जीवन में भी धर्म क्रांति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने एक तपस्वी द्वारा जलती लकड़ियों में नाग-नागिन के जोड़े को देखा, जो आग में

जल रहे थे। उन्होंने इसे हिंसा करार दिया और नमस्कार महामंत्र सुनाकर उन्हें मुक्ति प्रदान की। ये नाग-नागिन अगले जन्म में धरणेन्द्र और पद्मावती के रूप में उत्पन्न हुए। नाग भगवान पार्श्वनाथ

का प्रतीक भी है। आचार्यश्री ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ ने अनगिनत आत्माओं का कल्याण किया। उनके साधुओं का संपर्क भगवान महावीर के शिष्यों से हुआ, जिससे दोनों परंपराओं

में समन्वय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भगवान पार्श्वनाथ को 'पुरुषादानीय' विशेषण से सुशोभित किया गया है। वे अत्यंत लोकप्रिय तीर्थकर हैं। भारत भर में जितने मंदिर भगवान पार्श्वनाथ के हैं, उतने किसी अन्य तीर्थकर के नहीं। उनकी वंदना के लिए अनेक स्तोत्र और मंत्र रचे गए हैं। कल्याण मंदिर स्तोत्र और उवसग्गहरं स्तोत्र विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

पूज्यवर ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित गीत 'प्रभु पार्श्वदेव चरणों में' गीत का सुमधुर संगान किया गया और कहा कि हम भी वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ें और वीतराग बनने का प्रयास करें।

आचार्यश्री ने नवकार धाम तीर्थ के आध्यात्मिक वातावरण की सराहना की और यहां निरंतर साधना चलने की मंगलकामना की। पूज्यवर के स्वागत में नवकार धाम की ओर से परागभाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। भुज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

